



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 101]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मई 19, 2000/वैशाख 29, 1922

No. 101]

NEW DELHI, FRIDAY, MAY 19, 2000/VAISAKHA 29, 1922

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं सम्बद्ध शुल्क निदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 19 मई, 2000

अंतिम जांच परिणाम

विषय : आस्ट्रिया, चैक गणराज्य, रूस, रूमानिया तथा उक्रेन से सीमलैस ट्यूब्स के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच।

7/1/99-डीजीएडी : वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियम, 1995 को ध्यान में रखते हुए,

क. प्रक्रिया

प्रारंभिक निष्कर्षों के बाद नीचे वर्णित प्रक्रिया का पालन किया गया है:-

(क) निर्दिष्ट प्राधिकारी(जिन्हें इसके बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 10.11.99 की अधिसूचना द्वारा आस्ट्रिया, चैक गणराज्य, रूस, रूमानिया तथा उक्रेन से सीमलैस ट्यूब्स के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच के बारे में प्रारंभिक निष्कर्षों को अधिसूचित किया था और हितबद्ध पार्टियों से इसके प्रकाशन की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित रूप में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया था।

(ख) प्राधिकारी ने ज्ञात हितबद्ध पार्टियों को प्रारंभिक निष्कर्षों की एक प्रति भेजी थी जिनसे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर प्रारंभिक निष्कर्षों के बारे में अपने विचार, यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था।

(ग) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों को अपने विचार मौखिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए 9.2.99 को अवसर प्रदान किया। मौखिक रूप से प्रस्तुत करने वाली सभी पार्टियों से व्यक्त किए विचारों को लिखित में प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध किया गया। पार्टियों से प्रतिपक्षी पार्टियों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने और उसका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। याचिकाकर्ता तथा उपभोक्ता उद्योग के सदस्य मौखिक सुनवाई के लिए मौजूद थे। रूमानिया और रूस के निर्यातकों ने मौखिक सुनवाई के प्रयोजन से लिखित में अनुरोध प्रस्तुत किए थे, जिसमें वे उपस्थित नहीं हुए।

(घ) प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों के अगोपनीय अंशों वाली सार्वजनिक फाइल उपलब्ध कराई।

(ङ.) याचिकाकर्ता तथा हितबद्ध पार्टियों द्वारा दिए गए तर्कों को प्रारंभिक जांच परिणामों में/और या इन निष्कर्षों में समुचित रूप से विचार किया गया है और संक्षिप्तता की दृष्टि से उन्हें दोहरायाजैसे गया है।

(च) उक्त नियम 16 के अनुसार इन निष्कर्षों के लिए विचार किए गए अनिवार्य तथ्यों/आधार का खुलासा ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के लिए कर दिया गया था और उन पर मिली टिप्पणियों पर इन निष्कर्षों में विधिवत विचार किया गया है।

(छ) इस अधिसूचना में xxx चिह्न यह दर्शाता है कि उक्त सूचना हितबद्ध पार्टी द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई थी और नियमों के अनुसार प्राधिकारी ने भी इसे गोपनीय ही माना है।

ख. कार्रवाई की शुरुआत के बारे में

2. याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने आस्ट्रिया, चैक गणराज्य, रूमानिया तथा उक्रेन मूल के और वहां से निर्यातित सीमलैस ट्यूब्स के पाटित आयातों के विरुद्ध दिनांक 21 मई, 1999 को सार्वजनिक सूचना द्वारा इस जांच की शुरुआत की थी। जांच के दौरान डी जी सी आई एंड एस द्वारा संकलित किए गए आंकड़ों के अनुसार उक्रेन से किए गए आयात न्यूनतम पाए गए। अतः उक्रेन को इन जांचों के क्षेत्र से बाहर रखा गया।

3. विचाराधीन उत्पाद

भारत में डम्प किया जा रहा तथा मौजूदा मामलों में जांच के अधीन उत्पाद संबद्ध देशों के मूल की ऐसे सीमलैस ट्यूब्स, पाईप्स, लोहे के खोखले प्रोफाइल, मिश्रधातु अथवा नॉन-एलॉय स्टील (कास्ट आयरन को छोड़कर) हैं, जो कोल्ड ड्रान अथवा कोल्ड रोल्ड से भिन्न हों और जिनकी विशेषताएँ निम्नलिखित हों :

(क) लोहे अथवा नॉन-एलॉय स्टील की सीमलैस ट्यूब्स, कोल्ड रोल्ड नहीं, हॉट फिनिशड, जिनका बाहरी व्यास 273 मिलि. मी. अथवा 10 एन बी से अधिक न हो जिन्हें बॉयलर पाईप्स अथवा

लाइन पाईप्स के नाम से जाना जाता है जिसका प्रयोग हाइड्रोकार्बन उद्योग तथा प्रसंस्करण एवं सामान्य इंजीनियरी उद्योग में किया जाता है ।

(ख) तेल अथवा गैस की ड्रिलिंग में प्रयोग की जाने वाली केसिंग और ट्यूबिंग जिनका बाहरी व्यास 244.5 मिलि. मी. अथवा 9.5/8 " से अधिक न हो ।

सीमलैस ट्यूब्स/पाईप्स और लाइन/बायलर पाईप्स और केसिंग/ट्यूबिंग के रूप में वर्णित संबद्ध वस्तुएं सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 73 के सीमाशुल्क उप-शीर्ष संख्या 73.04, 7304.10, 7304.29 और 7304.39 के तहत वर्गीकृत हैं ।

(क) आयातकों द्वारा उठाए गए तर्क(ओ एन जी सी एल)

1. मौजूदा मामले में जांच किए जा रहे उत्पादों को मोटे तौर पर निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

(i) सीमाशुल्क के शीर्ष 7304.10 के तहत आने वाले तेल अथवा गैस के लिए प्रयुक्त किए जाने वाले सीमलैस लाइन पाईप्स;

(ii) शीर्ष 7304.29 के अंतर्गत आने वाले तेल अथवा गैस की ड्रिलिंग में प्रयुक्त होने वाली किसम की सीमलैस केसिंग ट्यूब्स;

(iii) शीर्ष 7304.29 के अंतर्गत आने वाले तेल अथवा गैस की ड्रिलिंग में प्रयुक्त होने वाली सीमलैस ट्यूबिंग;

(iv) शीर्ष 7304.39 के अंतर्गत आने वाले अन्य सीमलैस पाईप्स के रूप में उल्लिखित बॉयलर पाईप्स, फरनेस पाईप्स, सुपर हीटर्स, ट्यूब्स आदि जो प्रसंस्करण और सामान्य इंजीनियरी उद्योग में प्रयुक्त होते हैं ।

2. यह तथ्य कि इन तीनों शीर्षों के अंतर्गत आने वाली ट्यूब्स/पाईप्स पर मूल सीमाशुल्क एक समान दर से लगता है, इन उत्पादों को एक मानने का आधार नहीं हो सकता है । कम से कम चार प्रमुख भिन्न-भिन्न उत्पाद श्रेणियाँ विचाराधीन हैं, जिनके लिए पाटन का निर्धारण किया जाना है और जिनके लिए अलग से पाटनरोधी शुल्क अधिसूचित किए जाने चाहिए । रूस के निर्यातक मैसर्स वोलस्की जिन्होंने केवल 9.5/8 " व्यास की केसिंग पाइपों का ही निर्यात किया था, ने केवल इसी पाईप्स के लिए सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा उत्पादन लागत के बारे में सूचना दी थी । फलस्वरूप केसिंग पाइपों के लिए ही डम्पिंग मार्जिन का निर्धारण किया जा सकता है और ट्यूबिंग अथवा लाइन पाइप के लिए नहीं ।

3. केवल ऐसे विचाराधीन उत्पाद पर ही पाटनरोधी शुल्क लगाया जा सकता है, जिसका उत्पादन भारत में होता है । जिन पाइपों का उत्पादन किया जाता है/नहीं किया जाता है, ऐसे पाइपों के विभिन्न ग्रेड निम्नानुसार हैं :

(i) प्रोडक्शन ट्यूबिंग(7304.29) : सभी ग्रेडों का आयात किया गया है । बी टी सी, एक्स एल और प्रीमियम थ्रैड्स का आयात किया जाता है । भारत में किसी भी ग्रेड का उत्पादन नहीं होता है । के एस टी एल और आई एस टी एम जो प्रोडक्शन ट्यूबिंग का उत्पादन नहीं करते हैं और एम एस एल को घरेलू उद्योग में शामिल नहीं किया गया । भारत में थ्रैड की क्षमता केवल बी टी सी है । एक्स एल और प्रीमियम का उत्पादन नहीं किया जा

रहा है। प्रोडक्शन ट्यूबिंग को केसिंग ट्यूब के साथ बदला नहीं जा सकता है। केसिंग ट्यूब का न्यूनतम व्यास $4/1/2$ " है जबकि ट्यूबिंग का सबसे बड़ा व्यास $4/1/2$ " है।

अति व्यापन आकार कोई नहीं है अतः प्रतिस्थापन संभव नहीं है। इसके अतिरिक्त प्रयोग भी अलग है।

(ii) केसिंग ट्यूब्स(7304.29) : आयात किए गए ग्रेड जे-55, एन-80, एल 80, पी-110, सी 95 और क्यू-125 हैं। आयात किए गए थ्रैड बी टी सी, एक्स एल और प्रीमियम हैं। भारत में उत्पादित ग्रेड जे 55 और एन 80 हैं। केवल के एस टी एल इन दोनों ग्रेडों का विनिर्माण करता है तथा उनकी आपूर्ति करता है। आई एस टी एम केसिंग ट्यूब्स की आपूर्ति नहीं करता है।

भारत की थ्रैड क्षमता केवल बी टी सी है इसमें अंतः परिवर्तनीयता नहीं है। विभिन्न ग्रेडों की ट्यूबों की रासायनिक संरचना और अन्य विशेषताएं भिन्न-भिन्न हैं और तेल के कुओं के भिन्न-भिन्न स्थानों पर इनका प्रयोग होता है, जो कुएं के भिन्न-भिन्न स्थानों में पर्यावरण पर निर्भर करता है।

4. पाटनरोधी शुल्क अगर लगाया जाना है तो उसे केवल बी टी सी थ्रैड के साथ जे 55 तथा एन 80 के केसिंग पाइपों तक ही सीमित रखना होगा। एक्स एल वाले केसिंग पाइप तथा प्रीमियम थ्रैड केसिंग पाइपों के अन्य चार ग्रेडों (एल 80, पी 110, सी 95, क्यू 125) तथा प्रोडक्शन ट्यूबिंग के सभी ग्रेडों पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं हो सकता।

ख. हैवी मेटल्स एंड ट्यूब्स लिंग द्वारा उठाए गए तर्क

1. यह प्रतिवादी हीट एक्सचेंजर तथा अन्य यांत्रिकी ट्यूब्स के एक विनिमोता हैं जो प्राराभक कच्चे माल के रूप में हॉट फिनिशेड सीमलैस पाईप्स का उपयोग करते हैं। हीट एक्सचेंजर ट्यूबों की आवश्यकता मुख्यतः 25.4 मिलि. मी. बाहरी व्यास तथा इससे कम की होती है। इन ट्यूबों का विनिर्माण करने के लिए वे हॉट फिनिशेड ट्यूबों का आयात करते हैं, जो 33.4 मिलि. ओ डी अथवा 30 मिलि. मी. ओडी मोटाई में 2.8 मिलि., 3.2 मिलि., 3.4 मिलि. तथा इससे कम होती है जिसके कारण निम्नलिखित हैं :-

(क) हॉट फिनिशेड ट्यूबों को कोल्ड फिनिशेड ट्यूबों में परिवर्तित करने के लिए प्रक्रिया समय बहुत ही कम है।

(ख) बहुत कम समय के कारण उत्पादन लागत कम हो जाती है।

(ग) अंतिम उत्पाद की डिलीवरी तेजी से होती है।

यदि 33.4 मिलि. व्यास से अधिक आकारों में कच्चे .. गाल की ट्यूब का इस्तेमाल होता है तब उपर्युक्त लाभ प्राप्त नहीं किए जा सकते और तब यह उद्योग अर्थक्षम नहीं रहेगा।

2. घरेलू उद्योग (आई एस एम टी तथा के एस टी एल जो अब केवल एक ही कंपनी होगी) एक एकाधिकारी सप्लायर है और वह भी हॉट फिनिशेड आकारों का जो 38 एम एम बाहरी व्यास से से कम नहीं होगा। हॉट फिनिशेड स्थिति में 273 एम एम ओ डी से कम सभी आकारों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने वाली मौजूदा अधिसूचना के स्थान पर दूसरी अधिसूचना जारी की जानी चाहिए जिसमें ऐसे न्यूनतम तथा अधिकतम बाहरी व्यास का उल्लेख किया जाना चाहिए जिसके दायरे में पाटनरोधी शुल्क लागू होगा। यह रेंज 38 एम एम ओ डी से ऊपर 273 एम एम ओ डी व्यास तक होनी चाहिए।

3. मैटीरियल ग्रेड जैसे पी 5 तथा बी 91 के हॉट फिनिश्ड पाइपों के किसी भी आकार पर पाटनरोधी शुल्क नहीं होना चाहिए जो कि घरेलू हॉट फिनिश्ड उत्पादकों द्वारा तैयार नहीं किए जाते हैं।

(ग) ऑयल इंडिया लिंग :

जांच के दायरे के अंतर्गत आने वाले आकार के सभी किस्मों के सीमलैस ट्यूब्स पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है, हालांकि कुछ ग्रेडों जैसे केसिंग पी-110(5^{1/2}) के आकार को छोड़कर) एक्सएल, एल 80 और अन्य प्रीमियम ग्रेडों के लिए घरेलू क्षमता मौजूद नहीं है। चूंकि इन ग्रेडों के लिए कोई घरेलू क्षमता नहीं है जैसाकि पहले उल्लेख किया गया है इसलिए ट्यूबलर्स के ऐसे ग्रेडों के लिए पाटनरोधी शुल्क लगाने से स्वदेशी ट्यूबलर विनिर्माताओं को कोई संरक्षण नहीं मिल रहा है। बल्कि इससे तेल कंपनियों के लिए निविष्टि सामग्री की लागत में वृद्धि होगी और इससे उन देशों में स्थित विदेशी विनिर्माताओं को अनुचित लाभ मिलेगा जो इस जांच के दायरे से बाहर हैं।

(घ) निर्यातक-पेट्रोटेक्स-एस.ए.रोमन द्वारा दिए गए तर्क

1. यद्यपि प्रारंभिक निष्कर्षों में स्पष्ट तौर पर यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग (केएसएमटी + आईएसएमटी) एनपीएस 1.25^{1/2} (ओडी 42.3 मि0 मी0) से कम आकार के हॉट फिनिस्ड ट्यूबों पर पाटनरोधी शुल्क न लगाए जाने के बारे में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। जबकि यह एक सुविदित तथ्य है कि प्रभावित देशों में कई मिल एन पी एस 0.5^{1/2} (ओडी 21.3 मि0मी0) से हॉट फिनिस्ड पाइपों का उत्पाद नहीं कर सकती हैं।
2. इसी तरह, एल-80, पी-110, सी-98, क्यू-125, ग्रेड एक्स एल ग्रेड के केसिंग पाइपों को भारतीय उत्पादकों की ओर से इनकी उपलब्धता न होने के बावजूद पाटनरोधी शुल्क न लगाने के बारे में कोई प्रावधान नहीं किया गया है।
3. केएसएमटी ने आज तक एनपीएस दस इंच (ओडी 273.0 मिमी) के आकार में एक भी किलो सीमलैस पाइप का संतोषजनक ढंग से उत्पादन नहीं किया है।
4. इस बात की जांच किए बिना कि क्या इन सभी ग्रेडों का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा किया जाता है अथवा नहीं, सभी ग्रेड के सीमलैस पाइपों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है। उदाहरणार्थ, अलॉय स्टील ग्रेड¹ पी 5, पी 9, पी 91¹ जिनका परिशोधन-शालाओं में काफी प्रयोग किया जाता है, का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है। इसी प्रकार, यांत्रिक और अन्य अनुप्रयोगों के लिए विभिन्न विशेषीकृत ग्रेडों का उत्पादन घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है और ये काफी महत्वपूर्ण हैं।
5. 21 मीटर तक की लम्बाई वाले बायलर पाइपों का प्रयोग विद्युत परियोजनाओं के लिए किया जाता है। इतनी लम्बाई वाले पाइपों का उत्पादन भी घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा सकता है लेकिन, फिर भी इन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जाता है।

(ङ.) एबीबीएबीएल लिलो द्वारा दिए गए तर्क

1. तेल के पूर्वेक्षण हेतु इस्तेमाल किए जाने वाले लाइन पाइप, केसिंग पाइप, बायलर ट्यूब और पाइप इत्यादि स्वतंत्र उत्पाद हैं और इसलिए यह महसूस किया गया है कि इन उत्पादों को पाटनरोधी शुल्क के निर्धारण के प्रयोजनार्थ अथवा घरेलू उद्योगों को होने वाली वास्तविक क्षति के निर्धारण के प्रयोजनार्थ समान उत्पाद नहीं माना जा सकता है।
2. एबीबी एबीएल लिलो विभिन्न थर्मल विद्युत संयंत्रों एवं परियोजनाओं, औद्योगिक संयंत्रों, सीमेंट का निर्माण करने वाली मशीनरी, इलैक्ट्रोस्टेटिक प्रपातों, डलाई मदों इत्यादि के लिए उपकरणों सहित उच्च दाब वाष्प उत्पादक एककों का एक प्रमुख डिजायनर एवं विनिर्माता है। हम उच्च दाब बायलर एककों के पार्ट्स का विनिर्माण करने के लिए विभिन्न विनिर्देशनों एवं ग्रेडों वाले छोटे और सीमलेस कार्बन स्टील एवं अल्यूमिनियम स्टील ट्यूब को आयात करते हैं जिनका व्यास 26.9 मिमी से 559 मिमी के बीच होता है लेकिन हम उपरोक्त पांचों देशों में से किसी भी देश से ट्यूब और पाइपों का आयात नहीं करते हैं।

(च) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिलो (आयल एवं गैस प्रभाग)

रिलायंस इंडस्ट्रीज ओएनजीसी (40%) और एनरॉन (30 %) के साथ पन्ना-मुक्ता और ताप्ती परियोजनाओं में 30 % का भागीदारी हित धारक है। एनरॉन ऑयल एकड गैस इंडिया लिलो उक्त संयुक्त उद्यम का संचालक है। जहां तक ईएण्डपी के कार्यकलापों का संबंध है हम प्रारंभिक निष्कर्षों के पृष्ठ 13 से 18 में निहित तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम के प्रत्युत्तर से सहमत है।

(छ) घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्क

1. विभिन्न विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षों ने यह तर्क दिया है कि संबद्ध वस्तु के अनेक ग्रेडों/आकारों का भारत में उत्पादन नहीं किया जा रहा है और इसलिए इन्हें वर्तमान जांच के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए। जब तक भारतीय उद्योग के पास विचारधीन उत्पाद के समान उत्पाद का उत्पादन करने की क्षमता और योग्यता है तब तक इस मद पर शुल्क लगाया जाना चाहिए। इसके अलावा, नियमों के अंतर्गत समान वस्तु को अच्छी तरह परिभाषित किया गया है जो सदृश उत्पाद तक सीमित नहीं है।
2. घरेलू उद्योग ने जांच के दायरे के बारे में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

(क) जिन ग्रेडों का भारतीय उद्योग उत्पादन करने की क्षमता रखता है उन्हें जांच के दायरे से बाहर नहीं रखा जा सकता है :- जहां तक भारतीय उद्योग के पास देश में आयात किए जा रहे उत्पाद के समान उत्पाद का उत्पादन करने की क्षमता एवं योग्यता है तब तक इस मद को छूट नहीं दी जा सकती है और इसे जांच के दायरे के भीतर लाना होगा।

(ख) भारत में उत्पादन किए जा रहे ग्रेड्स लेकिन जिनका उत्पादन भारत में सभी कंपनियों द्वारा नहीं किया जा रहा है - यह भी तर्क दिया गया है कि कुछ भागीदार कंपनियों द्वारा कुछ माडलों का उत्पादन नहीं किया जा रहा है । जब तक भारत में समान वस्तु का उत्पादन किया जा रहा है, तब तक संदर्भाधीन माडल को अलग नहीं किया जा सकता है ।

(ग) जिन ग्रेडों के बारे में घरेलू उद्योग ने कोई आरोप नहीं लगाया है और जिन्हें वर्तमान जांच के दायरे से अलग नहीं रखा जा सकता है :—जिन ग्रेडों के बारे में घरेलू उद्योग ने कोई आरोप नहीं लगाया है और जिन्हें वर्तमान जांच के दायरे से अलग नहीं रखा जा सकता है—वे ग्रेड हैं—

लाइन पाइप/बायलर पाइप: अलाय स्टील की श्रेणी में निम्नलिखित माडल:

टी 5, टी 9 एवं टी 91 और पी 5, पी 9 और पी 91 एएसटीएमए 179 (सीडी)

एएसटीएमए 213 (अलाय)

एएसटीएमए 335 (अलाय)

एएसटीएमए 199 (अलाय)

एएसटीएमए 200 (अलाय)

एएसटीएमए 209 (अलाय)

एएसटीएमए 602 (अलाय)

(ii) लाइन पाइप/बायलर पाइप: कच्ची सामग्री के रूप में स्टेनलैस स्टील के सभी माडल -

(iii) ड्रिल पाइप : सभी प्रकार के ड्रिल पाइप

(घ) मिन्न प्रक्रिया द्वारा भारत में उत्पादन किए जा रहे ग्रेड: घरेलू उद्योग द्वारा '१' और '२' व्यास के हॉट फिनिस्ड लाइन पाइपों/बायलर पाइपों का उत्पादन नहीं किया जा रहा है । तथापि इन माडलों का उत्पादन भारतीय उद्योग द्वारा कोल्ड ड्रॉन प्रक्रिया के जरिए किया जा सकता है । इन माडलों का उत्पादन संबद्ध देशों के कुछ उत्पादकों द्वारा हॉट प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है । तथापि हॉट फिनिस्ड अथवा कोल्ड ड्रॉन प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए उत्पादित इन माडलों से एक समान भौतिक और रासायनिक गुण वाले उत्पाद बनते हैं जो मूल विनिर्माण प्रक्रिया से.. मिन्न विनिर्माण के रूप में भिन्न होते हैं और इनका प्रयोग एक जैसे कार्यों और उपयोग के लिए किया जा सकता है । वास्तव में ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थितनीय होते हैं । तथापि, कोल्ड ड्रॉन प्रक्रिया के जरिए आने वाली उत्पादन लागत हॉट फिनिस्ड प्रक्रिया के जरिए आने वाली उत्पादन लागत से थोड़ा अधिक होती है, हालांकि इन दोनों का व्यापार एक समान कीमतों पर किया जाता है । चूंकि भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादन की जा रही वस्तु आयातित वस्तु (हॉट फिनिस्ड प्रक्रिया का प्रयोग करके उत्पादित) के साथ तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से

प्रतिस्थापनीय है, इसलिए यह अनुरोध है कि इन्हें वर्तमान जांच के दायरे में शामिल किए जाने की जरूरत है।

(ड.) ऐसे अनेक माडल हैं जिनका उत्पादन भारतीय उद्योग द्वारा अपने अतिरिक्त प्रयोगों के जरिए किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, के एस टी एल के पास 95/8¹ तक के कोसिंग/ट्यूबिंग का उत्पादन करने की सुविधाएं हैं। तथापि, एल 80, सी 95, पी 110 और क्यू 125 ग्रेडों के लिए उन्हें बाहर से बहुत ही कम काम करवाना होता है। के एस टी एल ने अनुचित पाटिट कीमतों की वजह से ऐसे माडलों के लिए ओएनजीसी की निविदाओं के खिलाफ विगत अपेक्षा कोई उल्लेख नहीं किया है। ओएनजीसी को इस बात की जानकारी है कि केएसटीएल ने ओएनजीसी को 95/8¹ पी-110 ग्रेड की पेशकश की है और इसमें शामिल मात्रा अत्यधिक है। यह मामला पूर्णतया उद्योग के विवेक पर निर्भर करता है कि क्या वह संपूर्ण उत्पादन स्वयं करती है अथवा कुछ उत्पादन बाहर से करवाती है। उचित बिक्री कीमत का निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी उप-संविदा के कारण आने वाली लागत पर विचार कर सकता है।

4. प्राधिकारी द्वारा विचाराधीन उत्पाद की जांच:

प्राधिकारी ने सभी संबद्ध पक्षों के अनुरोधों और प्रत्युत्तरों पर सावधानीपूर्वक विचार किए हैं। आम तौर पर "पाइप" शब्द एक ऐसा शब्द है जिनका प्रयोग गैसों अथवा द्रवों का चालन करने के लिए प्रयुक्त छिद्र वाले एक लम्बे ढांचे के लिए किया जाता है। इस्पात उद्योग के मामले में यह एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग सभी ट्यूबलर उत्पादों के लिए किया जाता है जो ऐसे प्रयोजनों के निमित्त होते हैं जिसके लिए आम तौर पर ऐसे उत्पादों का प्रयोग किया जाता है जैसे ईंधन, गैस, भाप, तेल आदि का चलन।

उपरोक्त का तात्पर्य यह नहीं है कि अपनी आम परिभाषा की वजह से सभी ट्यूबलर उत्पाद एक समान उत्पाद हैं। चूंकि ट्यूबों/पाइपों को उस सेवा के अनुरूप अपनाया जाना चाहिए जिसे उनके द्वारा प्रदान किए जाने की उम्मीद की जाती है, इसलिए पाइपों की भिन्न-भिन्न किस्में होती हैं। तेल उद्योग की जरूरतों को पूरा करने के लिए विशेष गुणधर्मों वाले सीमलैस पाइपों का विकास किया गया है। गहरे तेल के कुंओं के आवरण के लिए उच्च प्रतिरोधी शक्ति वाले सीमलैस पाइपों की जरूरत पड़ती है ताकि बाहरी उच्च दबाव को बर्दाश्त किया जा सके। तेल उद्योग के लिए निर्मित अन्य सीमलैस पाइप की श्रेणियों और विशिष्ट ट्यूबों में शामिल हैं - आयल वैल ट्यूबिंग और लाइन पाइप। तेलशोधन, रसायन और उच्च-दाव-वाष्प उद्योग भी विशेष सीमलैस पाइप की मांग करते हैं।

बिल्लेट्स का अर्ध-परिष्कृत इस्पात के रूप में उल्लेख किया जाता है क्योंकि वे परिष्कृत इस्पात उत्पादों की यांत्रिक अभिक्रिया (अर्थात् हॉट रॉलिंग इत्यादि) द्वारा उत्पादन के लिए शुरुआती सामग्री का निर्माण करते हैं जिनमें ट्यूबलर उत्पाद शामिल हैं। इस्पातर मिल में इनमें से कई उत्पादों को कुछ ताप अभिक्रिया की जरूरत पड़ती है जिसका मुख्य उद्देश्य यांत्रिक गुणधर्मों में ऐसे परिवर्तन लाना है जिससे सामग्री वांछित प्रयोजन के उपयुक्त बन जाएगी।

अतः विचाराधीन उत्पादन का न केवल विनिर्माण प्रक्रिया की दृष्टि से अपितु कई अन्य कारकों पर विचार करने के पश्चात् विश्लेषण किया गया है, जिनमें शामिल हैं (i) पाइपों की विभिन्न श्रेणियों और ग्रेडों के भौतिक लक्षण (अर्थात् रासायनिक सम्मिश्रण तथा यांत्रिक विशेषताएं जैसे यील्ड अवरोध तथा दीर्घकपता) (ii) केसिंग तथा ट्यूबिंग की विशेष श्रेणियों के विनिर्माण में अपेक्षित विशेष प्रक्रिया (अर्थात् उष्ण अभिक्रिया) (iii) वह अंतिम उपयोग जिससे पाइपों/ट्यूबों की विभिन्न श्रेणियां संबद्ध हैं; (iv) उत्पादों की अदल-बदल कर उपयोग करने की योग्यता; (v) उपभोक्ताओं का अवबोधन; तथा (vi) टैरिफ वर्गीकरण ।

5. समान वस्तुएं

(क) आयातकों द्वारा दिए गए तर्क (ओ एन जी ईसी एल)

नियम 2(घ) के अंतर्गत यथा परिभाषित समान वस्तु की दो शाखाएं हैं । पहली शाखा का कार्य ऐसे प्रत्येक उत्पाद, जिसके पाटन का आरोप लगया जाता है, के लिए उस उत्पाद के घरेलू उत्पादकों की पहचान करना है जो कि जांचाधीन पाटन किए जा रहे उत्पाद से हर प्रकार से सदृश्य अथवा एक समान है ।

नियम 2(घ) के दूसरे भाग में यह प्रावधान है कि यदि ऐसा कोई उत्पादक नहीं है जो समान वस्तु का उत्पादन करता है तो ऐसे उत्पादक विचाराधीन उत्पाद के कथित पाटन के विरुद्ध आवेदन दायर कर सकता है जो विचाराधीन उत्पादन से काफी मिलते-जुलते लक्षणों वाली वस्तु का उत्पादन करते हैं ।

1. केसिंग के लिए घरेलू उद्योग

केसिंग ट्यूबों के संबंध में, के एस टी एल ऐसी वस्तु का उत्पादन करता है जो कि जे-55 तथा एन-80 श्रेणी की आयातित केसिंग ट्यूबों से सभी प्रकार से सदृश्य अथवा समान हैं । एम एस एल को घरेलू उत्पादक की श्रेणी से बाहर रखा जाता है तथा आई एस टी एम को आपूर्तिकर्ता के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है और न ही यह केसिंग ट्यूबों की आपूर्ति करता है । अतः, केसिंग ट्यूब के मामले में के एस टी एल ही एकमात्र घरेलू उत्पादक है जिसके पास आवेदन दायर करने का आधार है और कोई अन्य नहीं है । केसिंग पाइपों के कथित पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कोई विश्लेषण केवल के एस टी एल के संदर्भ में किया जाना चाहिए और इस उद्देश्य के लिए आई एस टी एम को शामिल करने से क्षति की स्थिति बिगड़ जाएगी ।

2. ट्यूबिंग हेतु घरेलू उद्योग

ट्यूबिंग उत्पादन के संबंध में न तो के एस टी एल और न ही आई एस टी एम के पास ट्यूबिंग उत्पादन की क्षमता है । प्राधिकारी ने इस तथ्य को भी नोट किया है । परिणामस्वरूप, ट्यूबिंग उत्पादन को इस जांच के क्षेत्र से बाहर रखा जाना चाहिए । अतः, प्रत्येक विचाराधीन

उत्पाद के लिए अलग घरेलू उद्योग है जिसके पास याचिका दायर करने का आधार है, तथा परिणामतः भिन्न उत्पादों के लिए वास्तविक क्षति का विश्लेषण भिन्न है। ऐसा तब अधिक है जबकि लाइन पाइपों को केसिंग पाइपों/उत्पादन ट्यूबिंग के साथ बदला नहीं जा सकता है, केसिंग ट्यूब और उत्पादन ट्यूबिंग एक दूसरे के साथ बदली नहीं जा सकती और बायलर ट्यूबों का इस्तेमाल वहां नहीं किया जा सकता है जहां पर केसिंग, उत्पादन अथवा लाइन पाइपों/ट्यूबों का इस्तेमाल किया जाता है।

(ख) घरेलू उद्योगों द्वारा दिए गए तर्क

तीन भागीदार कंपनियों (अर्थात् एम एस एल, के एस टी एल तथा आई एस एम टी) द्वारा उत्पादित वस्तुओं और संबद्ध देशों द्वारा निर्यातित वस्तुओं में कोई अंतर नहीं है जिसका कीमतों पर प्रभाव पड़ता हो। उपभोक्ताओं द्वारा दोनों का अदल-बदल कर उपयोग किया गया है। इसलिए दोनों का तकनीकी एवं वाणिज्यिक रूप से एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जा सकता है।

(ग) प्राधिकारी द्वारा समान वस्तु की जांच

प्राधिकारी यह उल्लेख करते हैं कि आदेश देते वक्त सभी क्रेताओं को अंतिम उपयोग के आधार पर पाइप/ट्यूब के विनिर्देशनों के तहत वांछित सामग्री का पर्याप्त रूप से विवरण देना आवश्यक होता है। समान उत्पाद का निर्धारण करने में एक महत्वपूर्ण कारक इसके अंतिम उपयोग प्रतिस्थापन योग्यता की जांच करना होगा। केसिंग पाइप का कोई क्रेता लाइन पाइप खरीदने के लिए तैयार हो जाएगा जबकि दोनों की कीमतें समान होंगी और पाइपों की इन दो श्रेणियों को मिलाकर एक समान वस्तु के रूप में माना जा सकेगा। एक उत्पाद से दूसरे की ओर जाने में यह भी निर्धारित करना शामिल होता है कि क्या दोनों उत्पादों की विशेषताएं एवं अंतिम उपयोग एक समान हैं।

उद्योग जगत में केसिंग, ट्यूबिंग और ड्रिलपाइप का उल्लेख ऑयल-कन्ट्री ट्यूबलर सामान(ओ सी टी जी) के रूप किया जाता है और वे विनिर्देशनों 5 ए, 5 ए सी ता 5 ए एक्स के अंतर्गत ए पी आई द्वारा शासित होते हैं। लाइन पाइपों केसिंग तथा उत्पादन ट्यूबिंग के भौतिक, रासायनिक तथा यांत्रिक विशेषताएं (जिनमें तनन बल, यील्ड अवरोध एवं दीर्घरूपता शामिल हैं) अंतिम उपयोग के आधार पर भिन्न होती हैं। चूंकि लाइन पाइपों का उपयोग निष्कर्षण उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता है, इसलिए वे केसिंग को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते और उनमें केसिंग पाइपों जैसा तनन बल, यील्ड अवरोध अथवा कठोरता नहीं होती है। केसिंग पाइप वे पाइप होते हैं जिन्हें सतह पर बिछाया जाता है और इनसे छिद्रित कुएं की दीवारों को भरा जाता है। उत्पादन ट्यूबिंग्स निकासी नली अथवा डिलीवरी नलिका के रूप में कार्य करती हैं और इस उद्देश्य से वे उत्पादक कूप में केसिंग के अंदर डाली जाती है। अतः, उत्पादन ट्यूबिंग्स का लाइन पाइप अथवा केसिंग के साथ अदल बदल कर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

ए पी आइ 5 एल लाइन पाइपों के लिए रसायनिक अपेक्षाओं में फोर्सफोरस तथा सल्फर के अलावा कार्बन और मैंगनीज का विनिर्दिष्ट प्रतिशत शामिल है। बॉयलर पाइपों में कार्बन, मैंगनीज, फोर्सफोरस, सल्फर तथा सिलिकोन होता है। बायलर पाइपों में यील्ड और तनन बल की विशिष्ट सीमा होती है। गहरे कुओं के लिए विशिष्ट केसिंग की जरूरत पड़ती है जिनमें अधिक गहराई तथा परिवर्ती स्तर पर उच्च दाब को सह सकने की अपेक्षित कठोरता और बल होती है। एच-40, जे-55, के-55 तथा एन -80 जैसे ग्रेडों में न्यूनतम बल होता है और पी-105, पी-110 ग्रेडों में उच्चतम बल होता है। यील्ड बल की सीमा एल-80 की तुलना में एन-80 जैसे 5 ए सी ग्रेडों से अधिक मजबूत होती है। एल-80 ग्रेड के ट्यूब्लर गहरे कुओं के प्रयोग के लिए उच्च बल प्रदान करते हैं। जे 55, एन 80, एच 40 तथा के 55 (केसिंग पाइपों का समूह-1) ग्रेडों में फासफोरस तथा सल्फर तत्व होते हैं। जबकि एल 80, सी 90, सी 95 तथा टी 95 ग्रेडों (समूह 2) में फासफोरस तथा सल्फर के अतिरिक्त कार्बन, मैंगनीज, मोलीब्डेनियम, क्रोमियम, निकिल, तांबा तथा सिलिकॉन शामिल हैं। पी 110 तथा क्यू 125 क्रमशः समूह 3 तथा 4 से संबंधित हैं। क्रोमियम और मोलीब्डेनियम के सम्मिश्रण द्वारा उच्च बल वाले ट्यूब्लर प्राप्त किए जाते हैं। तथापि, इन सभी वस्तुओं की उष्म अभिक्रिया नाजुक है और सी 75, एल 80 तथा सी 95 ग्रेडों के लिए अधिक व्यापक है। तनन तथा कठोरता आवश्यकताएं भी भिन्न हैं।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सीमलैस पाइपों को मुख्यतः भिन्न अंतिम उपयोग वाले लाइन, बॉयलर, केसिंग और ट्यूबिंग में वर्गीकृत किया जा सकता है।

6. याचिका दायर करने के आधार के बारे में

1. यह याचिका तीन भागीदार कंपनियों अर्थात् एम एस एल, के एस टी एल और आई एस एम टी की ओर से सीमलैस ट्यूब विनिर्माता एसोसिएशन द्वारा दायर की गई थी। भारत में छः कंपनियां हैं जिन्होंने सीमलैस ट्यूबों के उत्पादन हेतु क्षमता उत्पन्न कर ली है। टिस्को, रेमी मेटल्स तथा भेल ऐसी तीन अन्य कंपनियां हैं जिनके पास संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने की क्षमता है। इस याचिका का रेमी मेटल्स द्वारा समर्थन किया गया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा निम्नलिखित ध्यान बिन्दु पाए गए हैं :

- रेमी मेटल्स तथा भेल को संबद्ध वस्तुओं के आयातक के रूप में माना गया है और इसलिए उन्हें इससे बाहर रखा गया है;
- एम एस एल को जिन्दल ड्रिलिंग एंड इन्डस्ट्रीज लिंग से संबंधित पाया गया है। जिसके पास नामित देशों से संबद्ध वस्तुओं की महत्वपूर्ण बड़ी मात्रा है;
- स्थान का निर्धारण करने के लिए टिस्को के उत्पादन पर विचार किया गया है;

2. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं :

(i) रेमी मेटल्स तथा भेल से आयात घरेलू उद्योग निर्दिष्ट प्राधिकारी के इस निष्कर्ष से सहमत हैं कि इन कंपनियों ने संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है और इसलिए इन्हें जांच के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए। भेल संबद्ध वस्तुओं का एक प्रमुख उपभोक्ता है। भेल के उत्पादन को पात्र उत्पादन से अलग रखा जाना अपेक्षित है।

(ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा पात्र उत्पादन में टिस्को के उत्पादन पर विचार किया गया है। हालांकि याचिकाकर्ता द्वारा वर्तमान याचिका दायर करने की स्थिति के संबंध में कोई विवाद नहीं है। तथापि टिस्को को पात्र उत्पादन के रूप में विचार किया गया है क्योंकि किसी भी स्थिति में शर्तें पूरी हो जाती हैं। यह उल्लेख किया जाता है कि टिस्को ने शुरू में मौखिक रूप से यह क्यों कहा कि वे याचिका का समर्थन करेंगे। बाद में उनके द्वारा निष्पक्ष रहना ज्यादा उचित समझा गया है क्योंकि वे वर्तमान में संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर रहे हैं। इसलिए टिस्को को छोड़ जा सकता है।

(iii) यह उल्लेख किया जाता है कि एम एस एल को आयातक के रूप में नहीं माना जा सकता है और उसे वर्तमान जांच के दायरे से बाहर नहीं रखा जा सकता। दिनांक 15.7.1999 के पाटनरोधी नियमों के संशोधन में निर्दिष्ट प्राधिकारी को यह निर्णय लेने के लिए एक अधिकार प्रदान किया गया है कि क्या एक ऐसे उत्पादनकर्ता जो कि आयातक निर्यातक से संबंधित है अथवा खुद कथित पाटित वस्तुओं का आयातक है, को जांच में शामिल किया जाना चाहिए अथवा नहीं। पी एस एफ के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह निर्णय लिया गया है कि हालांकि रिलायंस उद्योग ने खुद संबद्ध वस्तुओं का आयात किया था तब भी यह घरेलू उद्योग के क्षेत्र में शामिल किए जाने का पात्र है। इसी प्रकार, नाइलोन टायर कोर्ड फैब्रिक के मामले में निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह निर्णय दिया था कि इस तथ्य के बावजूद कि वह आयातक से संबंधित है, एस आर एफ घरेलू उद्योग के क्षेत्र में शामिल किए जाने का पात्र है। वर्तमान मामले में, याचिकाकर्ता कंपनी ने स्वयं किसी मात्रा का आयात नहीं किया है और क्षति का निर्धारण किसी भी प्रकार से पक्षपाती नहीं होगा। इस संबंध में यह उल्लेख किया जाता है कि:

(क) जे डी आई एल और एस एस एल पब्लिक लिमिटेड कंपनियां हैं और वे कंपनी अधिनियम, 1956 के किसी प्रावधान के अंतर्गत संबंधित नहीं हैं। उनमें से कोई भी न तो संबंधित कंपनी है और न ही कंपनी अधिनियम, 1956 के खंड 4 के अनुसरण में किसी अन्य कंपनी की सहायक कंपनी है। वे न तो कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 370(1 ख) के अनुसरण में समान प्रबंधन के अधीन हैं और न ही कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 372(1) के अनुसरण में समान समूह में हैं।

(ख) एम एस एल तथा जे डी आई एल द्वारा किए जा रहे मुख्य व्यापार भिन्न-भिन्न हैं। एम एस एल, सीमलैस पाइपों के उत्पादन में संलग्न हैं जबकि जे डी आई एल मुख्य तटवर्ती तेल के कुंए खोदने में संलग्न है। एक सीमित सीमा तक यह सीमलैस पाइपों की थ्रेडिंग, अंतिम परिष्करण, कोल्ड पिल्जर, उष्म अभिक्रिया इत्यादि के कार्गों में भी संलग्न है। जिन्दल ने सभी वस्तुएं वोलस्की पाइप संयंत्र से ग्राहक की हैं जिसने प्राधिकारी के साथ सहयोग किया है। कंपनी द्वारा आयातित मात्रा *** मी.टन के क्षेत्र में है जो कि भारतीय मांग की एक नगण्य भाग है।

(ग) जेडीआईएल के प्रतिदिन के कार्य-संचालन की देख-रेख कंपनी के निदेशक बोर्ड के नियंत्रणाधीन पूर्णकालिक निदेशक द्वारा की जाती है। इसी प्रकार एमएसएल के प्रतिदिन के कार्य-संचालन की देख-रेख कंपनी के निदेशक बोर्ड के नियंत्रणाधीन प्रबंध निदेशक द्वारा की जाती है। दोनों कंपनियों के अपने खुद के पेशेवर निदेशक बोर्ड हैं। दोनों कंपनियों के निदेशक बोर्ड के संविधान से यह स्पष्ट है कि दोनों कंपनियों के बोर्ड में केवल एक उभयनिष्ठ निदेशक हैं, जो श्री डी०पी० जिन्दल हैं। बोर्ड द्वारा तब तक कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता है जब तक कि उसे एमएसएल के कम से कम दो निदेशकों द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया हो और जेडीआईएल के मामले में भी ऐसा ही है। यह कहा गया है कि किसी भी परिस्थिति में उभयनिष्ठ निदेशक निर्णय को प्रभावित नहीं कर सकता क्योंकि वह आवश्यक कोरम को पूरा नहीं करता है।

(घ) एमएसएल तथा जेडीआईएल जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की लिमिटेड कंपनियों का संचालन मूल रूप से निदेशक बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसका व्यापार के सभी पहलुओं पर नियंत्रण होता है। चूंकि दोनों कंपनियों के निदेशक बोर्ड में केवल एक ही उभयनिष्ठ निदेशक है इसलिए इस बात की कर्तव्य संभावना नहीं है कि एक कंपनी द्वारा दूसरी कंपनी को निर्देशित अथवा किसी प्रकार से नियंत्रित किया जा सकता है। नोट करने योग्य एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जेडीआईएल द्वारा उन साईजों का आयात किया गया है जो एमएसएल द्वारा उत्पादित नहीं होते हैं।

7. ओएनजीसीएल तथा वोल्स्की द्वारा दिए गए तर्क:

इस जांच की शुरुआत दिनांक 21.5.1999 को की गई थी और उस दिन असंशोधित नियम 2(ख) लागू था। यह नियम निर्दिष्ट प्राधिकारी को किसी प्रकार के स्वनिर्णय का अधिकार नहीं देता है और प्रत्येक ऐसे घरेलू उत्पादक, जो निर्यातक अथवा आयातक से संबंधित हैं अथवा जिन्होंने कथित पाटित वस्तु का आयात किया है, को 'घरेलू उद्योग' के दायरे से बाहर रखना पड़ता था। यह तथ्य कि महाराष्ट्र सीमलेस लिंग कथित पाटित वस्तु के एक आयातक से संबंधित है, प्राधिकारी की जानकारी में ओएनजीसीएल तथा वोल्स्की योजना द्वारा लाया गया था। पाटनरोधी संबंधी यूरोपीय संघ विनियमन 'संबद्ध' शब्द की परिभाषा देने के अलावा यह स्पष्ट करता है कि यदि किसी कंपनी का दूसरी कंपनी में 5 % से अधिक हिस्सा है तो उसे दूसरी कंपनी से संबद्ध कहा जाएगा। यूरोपीय संघ द्वारा प्रयोग की जा रही 'संबद्ध' शब्द की परिभाषा नीचे उद्दत की गई है :-

" इस प्रश्नावली को पूरा करने के उद्देश्य से किसी कंपनी को संबद्ध कंपनी माना जाना चाहिए यदि वह आपकी पूंजी में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 5 % से अधिक हिस्सा रखती हो अथवा किसी अन्य प्रकार से आपकी कंपनी पर नियंत्रण रखती हो अथवा यदि आपकी कंपनी का उनकी कंपनी में 5 % से ज्यादा हिस्सा हो अथवा किसी अन्य प्रकार से आपका उन पर नियंत्रण हो। इसके अलावा, एक ही धारक के तहत आने वाली कंपनियों को संबद्ध कंपनी समझा जाना चाहिए। वस्तुतः जांचधीन देशों से आयातित पाइपों की जेडीआईएल द्वारा आपूर्ति उसी बाजार में प्रतिस्पद्धात्मक रूप में की गई जहां कि एमएसएल द्वारा पाइपों की आपूर्ति की गई और इसलिए एमएसएल को छोड़ना पड़ा। "

8. प्राधिकारी द्वारा जांच

- यह याचिका मै0 महाराष्ट्र सीमलेस लि�0, मै0 कल्याणी सीमलेस ट्यूब्स लि�0 तथा मै0 इंडियन सीमलेस मेटल ट्यूब्स लि�0 की ओर से सीमलेस ट्यूब्स विनिर्माता संघ द्वारा दायर की गई है।
- जांच की शुरुआत के बाद प्राधिकारी की जानकारी में यह लाया गया था कि महाराष्ट्र सीमलेस लि�0 सीमलेस ट्यूब्स/पाईपों की एक पात्र घरेलू उत्पादक नहीं है क्योंकि वह मै0 जिन्दल ड्रिलिंग एंड इंडस्ट्रीज लि�0 (जेडीआईएल) से संबंधित है जो कि जांच अवधि के दौरान नामित देशों से संबद्ध वस्तु की आयातक तथा आपूर्तिकर्ता रही है।
- याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि जेडीआईएल तथा एमएसएल सार्वजनिक क्षेत्र की लिमिटेड कंपनियां हैं और कम्पनी अधिनियम, 1956 के किसी भी प्रावधान के तहत एक छूसरे से संबंधित नहीं हैं। कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 4 के अर्थों में उनमें से कोई भी संबद्ध कंपनी अथवा छूसरे की सहायक कंपनी नहीं है।¹ वे न तो कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा²(1ख) के अर्थों में एक ही प्रबंधक के तहत थीं और न ही कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 372 (11)के अर्थों में एक ही समूह में थीं।
- याचिकाकर्ताओं ने कहा है कि एमएसएल तथा जेडीआईएल द्वारा किया जाने वाला मुख्य व्यापार अलग-अलग है। एमएसएल सीमलेस पाइपों के विनिर्माण में संलग्न है जबकि जेडीआईएस मुख्य रूप से अस्ट्रीय तेलकूप की खुदाई में संलग्न है। यह सीमित रूप से सीमलेस पाइपों के थ्रेडिंग, एंड-फिनिशिंग, कोल्ड पिल्जर, हीट ट्रीटमेंट इत्यादि में भी संलग्न है। जिन्दल ने सभी सामग्रियों का आयात वोल्शकी पाईप प्लांट से किया है जिन्होंने प्राधिकारी को सहयोग दिया है।
- आयातकों तथा अन्य हितबद्ध पार्टियों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि मै0 एमएसएल ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का आयात किया था और इसके सहयोगी कंपनी मै0 जिन्दल ड्रिलिंग ने जांच की अवधि के दौरान मै0 वोल्शकी पाईप प्लांट से संबद्ध वस्तुओं के *** मी0 टन का आयात किया था। तथापि, मै0 एमएसएल ने बाद में यह स्पष्ट किया है कि 9.5/8³ ओडी सीमलेस स्टील केसिंग पाइपों की आपूर्ति के लिए, मै0 पैट्रोटब (रोमानिया) तथा मै0 विटकोविस (चेक गणराज्य) सहित ए पी आई द्वारा अनुमोदित विभिन्न मिलों से प्लेन एंड सीमलेस पाइपों तथा कपलिंग स्टॉक (मदर पाइपों) के 1,91,155⁴ मी0 टनों के आयात के लिए तथा एपीआई 5सीटी आर- III सीमलेस केसिंब्रा पाइपों के अनुसार 9.5/8⁵ ओडी, बीटीसी, ग्रेड जे-55, 40पीपीएफ जैसी निविदाकृत मदों की आपूर्ति के लिए दिनांक 19.2.98 की निविदा पूछताछ सं0 एमएटी/आईएमपी/252/डी-II /98-99 के बारे में एमएसएल द्वारा ओएनजीसीएल को लिखा गया पत्र केवल एक प्रस्ताव था जो कार्यान्वित नहीं हुआ और मै0 एमएसएल द्वारा निविदा पूछताछ में उल्लिखित संबद्ध वस्तुओं की कोई आयातित आपूर्ति नहीं थी। इसलिए प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता कंपनी मै0 एम एस एल ने जांच की अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के किसी आयात को प्रभावित नहीं किया।
- हालांकि जांच की शुरुआत के दिन असंशोधित नियम 2(ख) लागू था, लेकिन जांच की कार्यवाही के दौरान नियम 2(ख) में एक संशोधन के जरिए प्राधिकारी को एक विवेकाधिकार प्रदान किया गया था। जिन्दल ड्रिलिंग द्वारा संबद्ध वस्तुओं की आयात के कारण एमएसएल तथा जिन्दल ड्रिलिंग के बीच का संबंध प्रकाश में आया। जबकि

याचिकाकर्ताओं ने यह तर्क दिया है कि जिन्दल डिलिंग द्वारा आयात की गई मात्रा का भारतीय मांग में नगण्य अनुपात है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जिन्दल डिलिंग द्वारा आयात की गई मात्रा का केवल कोसिन्ड्रा पाइपों के कुल आयात में 1.40 % हिस्सा है। आयात की गई नगण्य मात्रा से यह उचित नहीं होगा कि मै0 एमएसएल को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जाए। नियम 2 (ख) में स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि 'घरेलू उद्योग' का अर्थ है ऐसे घरेलू उत्पादक जो समान वस्तु के उत्पादन में एक साथ संलग्न हैं.....अथवा जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन में एक बड़ा हिस्सा बनता है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि महाराष्ट्र सीमलेस लि�0 : ०,000मी0 टन प्रति वर्ष की उत्पादन क्षमता के साथ भारत में सीमलेस स्टील पाइपों एवं ट्यूबों की सबसे बड़ी विनिर्माता है। उनके पास एन-80, एल80, सी-95, पी-110 तथा क्यू-125 जैसे उच्चतर ग्रेडों में ओसीटीजी रेज के विनिर्माण की सुविधाएं हैं।

7. प्रारम्भिक जांच के समय घरेलू उद्योग में मै0 कल्याणी सीमलेस तथा मै0 इंडियन सीमलेस शामिल थे जिसका संबद्ध वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन में 66.69 % हिस्सा था और इस प्रकार उसके पास दिनांक 15.7.1999 को पाटनरोधी नियमों में संशोधन किए जाने के पहले भी याचिका दायर करने के लिए अपेक्षित आधार था। यद्यपि इस मामले की शुरुआत उस दिन हुई थी जिस दिन असंशोधित नियम 2(ख) लागू था, तथापि प्राधिकारी ने बाद में अपने विवेकाधिकार का प्रयोग किया जिसकी अनुमति उक्त नियम में विशेषतः रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए संशोधन के द्वारा दी गई थी। उपरोक्त तथ्यों पर ध्यानपूर्वक विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी ने माना है कि एमएसएल भी उस घरेलू उद्योग का एक हिस्सा है जो इन जांचों के प्रयोजनार्थ मै0 महाराष्ट्र सीमलेस लि�0, मै0 कल्याणी सीमलेस लि�0 और मै0 इंडियन सीमलेस मेटल ट्यूब्स लि�0 को मिला कर बना है।

९. घरेलू उद्योग:

यह याचिका मै0 महाराष्ट्र सीमलेस लि�0, मै0 कल्याणी सीमलेस ट्यूब्स लि�0 तथा मै0 इंडियन सीमलेस मेटल ट्यूब्स की ओर से सीमलेस ट्यूब्स विनिर्माता संघ के द्वारा दायर की गई है। संबद्ध वस्तु के अन्य घरेलू विनिर्माता टिस्को, रेमी मेटल्स तथा बीएचईएल हैं।

उपर उल्लिखित छ: कम्पनियों ने सीमलेस ट्यूबों के उत्पादन के लिए क्षमता का सृजन कर लिया है। बीएचईएल ने मुख्य रूप से स्वयं की खपत के लिए क्षमता का सृजन किया है। यह नोट किया गया है कि रेमी मेटल्स ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से 7884.79मी0 टन संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है। बीएचईएल ने भी संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है लेकिन उन स्रोतों से किया है, जो सूचीबद्ध देशों में नहीं आते हैं। उपरोक्त पर ध्यानपूर्वक विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी द्वारा यह निर्णय लिया गया था कि बीएचईएल द्वारा स्वयं की खपत के लिए और रेमी मेटल्स द्वारा नामित स्रोतों से संबद्ध वस्तुओं के पर्याप्त मात्रा में किए गए आयात को देखते हुए रेमी मेटल्स और बीएचईएल को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जाए। टिस्को ने उत्पादन करना बंद कर दिया है और मौजूदा याचिका का समर्थक नहीं है। इन अंतिम निष्कर्षों के पैरा-8 में जैसाकि उल्लेख किया गया है, घरेलू उद्योग में मैसर्स महाराष्ट्र सीमलैस लि�0, मैसर्स कल्याणी सीमलेस लि�0 और मैसर्स इंडियन सीमलेस मेटल ट्यूब्स शामिल हैं जिनका संबद्ध वस्तुओं के कुल घरेलू उत्पादन में 100 % हिस्सा बनता है और इसलिए नियमों के तहत याचिका दायर करने का अपेक्षित आधार है।

10. पाटन

(क) रुमानिया

1. निर्यातक में पैट्रोटब द्वारा दिए गए तर्क

(क) सामान्य मूल्य

घरेलू बिक्री के लिए बिक्री मूल्य ढांचे के बारे में यह कहा गया है कि सभी पैट्रोटब घरेलू बिक्रियाँ कारखानाद्वार पर सुपुर्दगी की शर्तों पर की गई थी ताकि उसके बाद कोई अन्य प्रभार नहीं घटाया जाय। कीमतें तयशुदा संविदा के अनुसारथी ; कोई छूट नहीं दी गई थी और किसी कमीशन का भुगतान नहीं किया गया था। कारखानाद्वार पर कीमत नहीं बताई गई है। जॉच अवधि के दौरान ग्रेड बी की कुल घरेलू बिक्री.....अमरीकी डालर मूल्य की.....थी।

कीमत प्रति टन.....अमरीकी डालर बैठती है। पी-110 की घरेलू बिक्री की कुल मात्रा.....टन थी जिसका मूल्य.....अमरीकी डालर था। कीमत प्रति टनअमरीकी डालर बैठती है।

ग्रेड बी की कुल कारखाना लागत (घरेलू बिक्री की).....अमरीकी डालर/टन बतायी गई है और निवल लाभ.....अमरीकी डालर/टन है। इकाई बिक्री कीमत.....अमरीकी डालर/टन है। पी-110 की कारखाना लागत (घरेलू बिक्री की).....अमरीकी डालर प्रति टन है और निवल लाभ.....अमरीकी डालर/टन है। इकाई बिक्री कीमत.....अमरीकी डालर/टन है।

(ख) निर्यात कीमत

उत्तर में यथा उल्लिखित ग्रेड बी के लिए कारखाना द्वार स्तर पर कीमत.....अमरीकी डालर प्रति टन है। सुपुर्दगी शर्त सी एंड एफ आधार पर है। प्रभारों के दावे अन्तर्राज्यीय भाड़े (.....अमरीकी डालर/टन) भडारण एवं रख-रखाव (.....अमरीकी डालर/टन), सीमाशुल्क कमीशन.....अमरीकी डालर/टन की दर से और व्यापारी के कमीशन.....अमरीकी डालर प्रति टन की दर से किए गए हैं। विदेशी भाड़ाअमरीकी डालर/टन है। ग्रेड बी के लिए औसत संविदा कीमतअमरीकी डालर/टन बैठती है। प्राधिकारी ने निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी की सौदावार जॉच की है।

पी-110 के लिए कारखाना द्वार स्तर पर कीमत.....अमरीकी डालर/टन है जैसाकि उत्तर में कहा गया है। सुपुर्दगी शर्त एफओबी आधार पर है। प्रभारों के दावे अन्तर्राज्यीय भाड़े (.....अमरीकी डालर/टन), भंडारण व रख-रखाव (.....अमरीकी डालर/टन), सीमाशुल्क कमीशन.....अमरीकी डालर/टन की दर से किए गए हैं। व्यापारी का कमीशन और विदेशी

भाड़ा शून्य है । प्राधिकारी ने विदेशी भाड़ा.....अमरीकी डालर/टन लिया है । पी-110 के लिए संविदा कीमत.....अमरीकी डालर/टन बैठता है ।

फर्म द्वारा प्रस्तुत लाभ व हानि लेखे से यह देखा जा सकता है कि उन्हें हानि हुई है । उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में और कारखाना द्वार पर कथित घरेलू कीमत के अभाव में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए परिकलित उत्पादन लागत को लिया गया है । परिकलित उत्पादन लागत.....अमरीकी डालर/मी. टन है ।

(ग) पाटन मार्जिन

लाइन ग्रेड-बी के सामान्य मूल्य.....अमरीकी डालर प्रति टन और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर/टन के आधार पर पाटन मार्जिन...../टन बनता है (जो निर्यात कीमत का 61.4% है) ।

पी-110 के सामान्य मूल्य.....अमरीकी डालर/टन और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर/टन के आधार पर पाटन मार्जिन...../टन बनता है (जो निर्यात कीमत का 25.3% है) ।

2. सिलकोटब एसए द्वारा दिए गए तर्कः-

जैसाकि प्रारंभिक जाँच परिणाम के पैरा-I(II) में कहा गया है ग्रेड 73.04.10.10 की कुल बिक्री (घरेलू + निर्यात) १०० टन में से भारत को निर्यात केवल 4.48% किया गया है, जबकि तीसरे देशों को निर्यात 64.88% किया गया है । इसी प्रकार ग्रेड 73.04.39, 73.04.10 और 73.04 का तीसरे देशों को निर्यात क्रमशः 78.2%, 76.4% और 26.15% किया गया है । तथापि निर्यातक ने परिशिष्ट 4-घ के जरिए कहा है कि भारत से इतर देशों को निर्यात घाटे पर किया गया है । भारत को निर्यात लाभ पर किया गया है ।

(क) सामान्य मूल्य

घरेलू बिक्री के लिए बिक्री कीमत ढाँचे में यह कहा गया है कि उन्होंने कारखाना द्वार स्तर के बाद कोई शुल्क नहीं लगाया है । परिणामस्वरूप पैकिंग, अन्तर्राज्यीय भाड़ा, बीमा, भंडारण, रख-रखाव और करों के आधार पर कोई प्रभार नहीं दर्शाया है । कोई छूट नहीं दी गई है । 73.04.39 और 73.04.10.10 के लिए बिक्री कीमत क्रमशः १०० अमरीकी डालर और १०० अमरीकी डालर दर्शाई गई हैं ।

परिशिष्ट 4-ख में (घरेलू बिक्री की कारखाना लागत व लाभ) इन ग्रेडों की औसत कारखानागत लागत 520 अमरीकी डालर/टन है । चूँकि अधिकांश बिक्री अर्थात् तीसरे देशों को

निर्यात घाटे पर हुआ है इसलिए घरेलू बिक्री जो (73.04.10.10 ग्रेड के लिए) 30.62% है और (73.04.39 ग्रेड के लिए) 18.57% है में लाभ नहीं हो सकता है। इस स्थिति में प्राधिकारी संबद्ध वस्तुओं की परिकलित लागत को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं जोअमरीकी डालर/टन है।

(ख) निर्यात कीमत

ग्रेड 73.04.10.10 के लिए कारखाना द्वार स्तर पर कीमत.....अमरीकी डालर प्रति टन है, जैसाकि कहा गया है। छूट.....अमरीकी डालर है। कारखाना द्वार के बाद और एफओबी से पहले प्रभार (प्रति टन) में अन्तर्राष्ट्रीय भाड़ा (.....अमरीकी डालर), रखरखाव (.....अमरीकी डालर, सीमाशुल्क.....अमरीकी डालर, अन्य.....अमरीकी डालर शामिल हैं। एफओबी के बाद किसी प्रभार का दावा नहीं किया गया है। प्राधिकारी ने विदेशी भाड़े कोअमरीकी डालर/टन लिया है। ग्रेड 73.04.10.10 के लिए सूची मूल्य.....अमरीकी डालर/टन अभिकलित किया गया है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए ब्यौरों की सौदावार जाँच की है।

ग्रेड 73.04.39.91 के लिए कारखाना द्वार पर कीमत.....अमरीकी डालर है जैसाकि उत्तर में कहा गया है। छूटअमरीकी डालर है। कारखाना द्वार के बाद प्रभार (प्रति टन) में अन्तर्राजीय भाड़ा.....अमरीकी डालर, रखरखाव.....अमरीकी डालर, सीमाशुल्क.....अमरीकी डालर, अन्य— अमरीकी डालर शामिल है। विदेशी भाड़ा.....अमरीकी डालर/टन की दर से हैं। ग्रेड 73.04.39.91 के लिए सूची मूल्य.....अमरीकी डालर प्रति टन है, जैसाकि वतलाया गया है।

यह बात नोट की गई है कि तीसरे देशों के लिए निर्यात कीमत वही है जो कीमत भारत के लिए है।

(ग) पाटन मार्जिन

लाइन पाइभ के लिए परिकलित लागत.....अमरीकी डालर प्रति टन और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर प्रति टन के आधार पर पाटन मार्जिन.....अमरीकी डालर/टन आता है (जो निर्यात कीमत का 56.7% है)।

बायलर पाइभ के लिए परिकलित लागत.....अमरीकी डालर प्रति टन और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर के आधार पर पाटन मार्जिन...../टन निकलता है (जो निर्यात कीमत का 42.7% है)।

(ख) रूस

1. वोल्सकी पाइप प्लांट द्वारा दिए गए तर्क

(क) सामान्य मूल्य

निर्यातक ने यह कहा है कि 'सभी कीमतें कारखाना द्वार स्तर पर दी गई हैं । इसलिए इसमें कोई कटौती नहीं की गई है । इसमें ऐसी कोई छूट शामिल नहीं है जो घरेलू बाजार को दी गई है और कारखाना द्वार के बाद अन्तर्राज्यीयभाषा, बोमा, भंडारण, रखरखाव व करों इत्यादि के आधार पर कोई प्रभार नहीं लगाए गए हैं । 6.46 रूबल = । अमरीकी डालर की औसत विनियम दर पर कारखाना द्वार पर कीमत रूबल में.....या अमरीकी डालर में.....दावा की गई है । जाँच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में बेची गई मात्रा (टन में)थी ।

यह निवेदन किया गया है कि इस उत्पाद की कारखाना द्वार पर लागतरूबल प्रति टन याअमरीकी डालर प्रति टन है और कर पूर्व निवल लाभ.....रूबल याअमरीकी डालर है । इकाई बिक्री कीमत.....रूबल या.....अमरीकी डालर है ।

तथापि बोल्सकी द्वारा प्रस्तुत लाभ व हानि लेखे को देखने से यह पता चलता है कि कम्पनी को कुल मिलाकर संचालनात्मक हानि हुई है । इसलिए प्राधिकारी संबद्ध वस्तुओं की परिकलित लागत को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं जोअमरीकी डालर/मी.टन है ।

(ख) निर्यात कीमत

वोल्सकी ने कहा है कि उसने जाँच अवधि में केवल भारत को 9.5/8 'ओडी के केसिंग पाइपों की आपूर्ति की थी । कोई दूसरी श्रेणी के पाइपों की आपूर्ति नहीं की गई थी । वोल्सकी पाइप प्लांट द्वारा भारत को जाँच अवधि के दौरान कुल 18281 टन निर्यात किया गया था । भारत को किया गया निर्यात कम्पनी की कुल बिक्री का 71.4% है ।

भारत को किए गए निर्यात के लिए बिक्री कीमत ढांचे में कारखाना द्वार के बाद और एफओबी से पहले औसतन.....रूबल पैकिंग प्रभार का दावा किया गया है । रेल, सड़क प्रभार के रूप में औसतन.....रूबल की दर से, भंडारण.....रूबल की दर से और सीमाशुल्क क्लीयरेंस.....रूबल की दर से लगाया गया है । एफओबी के बादप्रभार विदेशी भाषा और अग्रेषण के कारण लगाया गया है, जो.....रूबल है । प्राधिकारी ने बीमा प्रभार.....% की दर पर या.....अमरीकी डालर की दर पर और दुलाई प्रभार.....अमरीकी डालर की दर से स्वीकार किया है, इस प्रकार कुल प्रभार.....अमरीकी डालर बनता है । भारित औसत कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर है । प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराए गए व्यौरों की सौदावार जाँच की है ।

यह निवेदन किया गया है कि इस उत्पाद की कारखाना द्वार पर लागत.....रुबल प्रति टन या.....अमरीकी डालर और कर पूर्व निवल लाभ.....रुबल या.....अमरीकी डालर है । इकाई बिक्री कीमतरुबल या.....अमरीकी डालर है ।

(ग) पाटन मार्जिन

केसिंग पाइप के लिए परिकलित लागत.....अमरीकी डालर प्रति टन और कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत.....अमरीकी डालर/टन की दर से लेते हुए पाटन मार्जिन...../टन बनता है (जो निर्यात कीमत का 107.2% के लगभग है ।

2. मे. मित्सुई एंड कम्पनी लि. द्वारा दिए गए तर्कः

(क) मित्सुई एंड क. लि. टोक्यो ने प्राधिकारी को सूचित किया है कि ओएनजीसीआयल इंडिया लि. और भारत में तेल खनन कार्य में लगे दूसरे सरकारी निगमों को संबद्ध वस्तुओं के आपूर्तिकर्ता के रूप में वह इस जाँच में एक हितबद्ध पार्टी है । प्रकटन विवरण के अपने उत्तर में बोल्सकी ने कहा है कि उसनेमी.टन केसिंग पाइप की आपूर्ति.....अमरीकी डालर (एफओबी)या.....अमरीकी डालर/टन पर मित्सुई को की थी । उक्त मात्रा मित्सुई ने ओएनजीसीएल को.....अमरीकी डालर/टन (एफओबी) पर निर्यात की थी । प्राधिकारी नोट करते हैं कि वोल्सकी द्वारा मित्सुई को दी गई कीमत की अपेक्षा मित्सुई द्वारा ओएनजीसी को दी गई ईकाई कीमत में एक असामान्य वृद्धि है । जिसके लिए कोई व्यौरे प्रस्तुत नहीं किए गए हैं । एक व्यापारिक घराने के रूप में मित्सुई कमीशन का हकदार हो सकता है । तथापि, बोल्सकी ने प्रश्नावली के अपने उत्तर में व्यापारिक कमीशन के लिए समायोजनों का दावा नहीं किया है और मित्सुई ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया था । मित्सुई द्वारा ओएनजीसी को संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति के लिए निर्यात कीमत में महत्वपूर्ण वृद्धि के लिए किसी औचित्य के अभाव में प्राधिकारी ने मित्सुई के लिए वही निर्यात कीमत और समायोजन अपनाए हैं जो कि वोल्सकी के लिए स्वीकार किए हैं ।

(ख) पाटन मार्जिन

केसिंग पाइपों के लिए परिकलित लागत *** यू एस डालर/टन और कारखानागत नियति कीमत *** यूएस डालर/टन मानते हुए पाटन मार्जिन *** /टन निकलता है । (जो कि निर्यात कीमत का लगभग 107.2 % है)

3. गैर-सहकारी निर्यातक

जैसाकि प्रारम्भिक निष्कर्षों के पैरा 11 मे बताया गया है, प्राधिकारी ने सम्बद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों को एक प्रश्नावली भेजी। तथापि, प्राधिकारी ने नोट किया कि आस्ट्रिया, चैक गणराज्य और यूक्रेन के निर्यातकों ने आवश्यक सूचना प्रस्तुत करने के लिए प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है। इसलिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के संबंध में इन निर्यातकों द्वारा कोई दावे नहीं किए गए हैं। इसलिए प्राधिकारी ने उन्हें गैर-सहकारी माना है और उसे क्रमशः सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के बारे में परिकलित कीमत पर तथा याचिकाकर्ता द्वारा उपलब्ध कराई गई सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर निर्भर करना पड़ा।

11. पाटन

घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए तर्क :-

दिनांक 15.7.99 की अधिसूचना सं0 44/99-सीयूएस (एनटी) के अनुसार रुस, चैक गणराज्य और यूक्रेन के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण उक्त अधिसूचना के प्रावधानों के अनुसरण में किया जाना चाहिए।

(1) वोल्सकी पाईप प्लांट:-

(i) विशेषकर वोल्सकी और सामान्य तौर पर रुस के सभी उत्पादकों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण संशोधित नियमों के अनुसार करने की आवश्यकता है। इस प्रतिवादी की उत्पादन लागत के घरेलू उद्योग विश्लेषण पर निर्यातक ने कोई आपत्ति नहीं की थी और उत्पादन लागत के बारे में व्यक्त किए गए विचार तथा उत्पादन लागत से संबंधित विभिन्न तत्व मौखिक सुनवाई को समय निर्विवादित रहे।

(ii) निर्यातकों ने अनुबंध-I में बताया है कि भारत को किए गए निर्यात 18284 मी0 टन के थे तथापि परिशिष्ट 2 ख में इनके 17073 मी0 टन होने का दावा किया गया है। कंपनी ने भारत को किए गए निर्यातों के माह-वार व्यौरे नहीं दिए हैं। इसके साथ ही निर्यात की गई कुल मात्रा इस परिशिष्ट में दिखाई गई है।

(iii) कंपनी द्वारा दावा की गई उत्पादन लागत, बिक्री कीमत और लाभों का अनुमान और भारतीय उत्पादकों के साथ उसकी तुलना की जानकारी 'गोपनीय' आधार पर उपलब्ध कराई जा रही है। कंपनी द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना से इस विचार को पुष्टि मिलती है कि उत्पादकों का लागत ढांचा रुस और यूक्रेन जैसे गैर-बाजार अर्थव्यवस्था देशों में अविश्वसनीय है।

(iv) कंपनी ने जांच अवधि में विभिन्न महीनों में विनिमय दरों की जानकारी दी है जिससे स्थानीय मुद्रा में, जैसाकि देखा जा सकता है, काफी उतार-चढ़ाव रहा है।

(v) कंपनी के मालिकों/प्रमुख शेयर धारकों की सूची के गोपनीय होने का दावा किया गया है।

(vi) कंपनी को निगमन-प्रमाणपत्र केवल अप्रैल, 1998 में दिया गया था जबकि वर्तमान जांच अप्रैल, 97 से सितम्बर, 98 की है। इसका अभिप्राय यह है कि उक्त कंपनी पूरी जांच अवधि में भी निगमित नहीं हुई थी। तथापि कंपनी एक दशक से भी अधिक से अस्तित्व में रही प्रतीत होती है। अप्रैल, 98 से पहले कंपनी की स्थिति स्पष्ट नहीं है।

(2) रोमानिया के मामले में पाटन और पाटन मार्जिन:-

जबकि यह माना जाता है कि निर्यातक प्रश्नावली का जवाब देते समय सूचना के गोपनीय होने का दावा कर सकते हैं लेकिन वर्तमान मामले में सारे जबावों के गोपनीय होने का दावा किया गया है। यह नियम 7 के प्रावधानों के प्रतिकूल है। निर्यातकों ने घरेलू बाजार में अपनी बिक्री के कारोबार-न्वार व्यौरों के संबंध में सूचना उपलब्ध कराई प्रतीत नहीं होती है।

(क) सिल्कोटब एस ए:-

सामान्य मूल्य:-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी के प्रारम्भिक निष्कर्षों में यह कहा गया है कि बिक्री का अधिकांश हिस्सा तृतीय देशों को किए गए निर्यात हैं जो कि घाटे में रहे। आगे यह भी तर्क दिया गया है कि तृतीय देशों की निर्यात कीमत वही है जो कि भारत की कीमतें हैं और भारत को किए गए निर्यात लाभकारी हैं। जब अधिकांश बिक्री हानि में है, तो दूसरी बिक्रियां उत्पादन लागत की वसूली की अनुमति नहीं देती हैं, जब सभी बिक्रियां समान कीमतों पर की गई हैं। आगे यह भी कहा गया है कि निर्यातक ने घरेलू लागत के ब्यौरे उपलब्ध नहीं कराए हैं। यदि यह मान भी लिया जाए कि बिक्री कीमतें भारित औसत आधार पर उत्पादन लागत की वसूली की अनुमति दे देती हैं, तो भी इस बारे में निवेदन है कि वह पर्याप्त नहीं है और निर्यातक को यह प्रमाणित करने की आवश्यकता है कि घरेलू बाजार में सारी बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के रूप में की गई।

निर्यात कीमत:-

निर्यातक ने रोमानिया के भीतर अंतर्राष्ट्रीय भाड़े के कारण हुआ कोई व्यय नहीं दर्शाया है। एफ ओ बी के पश्चात् किसी भी प्रकार का दावा नहीं किया गया है। स्पष्ट है कि माल किसी कंपनी द्वारा उत्पादक से खरीदने के पश्चात् निर्यात किया गया। इस प्रकार का मामला होने के कारण, निर्यातक यह प्रमाणित नहीं कर सका है कि भारत को माल/^{की} निर्यात का दावा की गई।

कीमतों पर किया गया । इसके अलावा, निर्यातक द्वारा यह भी प्रदर्शित किया गया है कि क्रेता और विक्रेता के बीच कोई पूरक प्रबन्ध नहीं है ।

(ख) पैट्रोल्यूम एस.ए.

ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू बिक्री कारोबार के बारे में निर्यातक द्वारा कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई । इस प्रकार का मामला होने के कारण निर्यातक द्वारा किया गया दावा अपर्याप्त प्रतीत होता है और इसके जबाब को केवल इसी आधार पर अस्वीकार किया जाना अपेक्षित है । यह समझ में नहीं आता है कि निर्यातक किस प्रकार यहदावा कर सकता है कि उसे घरेलू बाजार में बिक्री से और भारत को किए गए निर्यातों से लाभ हुआ था जबकि कंपनी को समग्र रूप से हानि हुई है । चूंकि निर्यातक अन्य प्रकार की वस्तुएं भी उत्पादित करता प्रतीत होता है, इसलिए स्पष्ट रूप से निर्यातक ने दावा किया है कि उसे अन्य ग्रेडों से काफी क्षति हुई है और ग्रेडों से हानि हुई है जो भारत को निर्यात किए गए । निर्यातकों द्वारा यह प्रमाणित करने की आवश्यकता है कि घरेलू बाजार में की गई बिक्रियां व्यापार के सामान्य तरीकों से की गई थीं और निर्यात कीमत को प्रतिनिधि कीमत माना जा सकता है और इसे परिकलित करने की आवश्यकता नहीं है ।

सुनवाई के समय यह तर्क दिया गया था कि रोमानिया के उत्पादक 15 % समुद्री मालभाड़े के भ्रातान और कमीशन और व्यापारिक घरानों के सेवा प्रभारों सहित अन्य कारणों से हुए खर्चों के पश्चात भी प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम हैं । यह ठीक वही मुद्दा है जिसे घरेलू उद्योग उठाया गया था कि रोमानिया के उत्पादक इतना अधिक खर्च वहन कर रहे हैं और यह संभव नहीं है कि ये उत्पादक ऐसी कीमतों पर लाभ कमा सकें । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा स्पष्ट रूप से यह निर्णय लिया गया है कि रोमानिया के निर्यातक हानि उठा रहे थे और एक उत्पादक की अधिकांश बिक्री हानि में थी । पाटन का प्रमाण उनके अपने ही दावे में ही निहित है ।

(ग) गैर-सहकारी निर्यातकों पर शुल्क

प्रारंभिक निष्कर्षों से यह पाया गया है कि रोमानिया के मामले में अवशिष्ट श्रेणी पर पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण सहकारी निर्यातकों से कम पर किया गया । यह परिपाटी गैर-सहकारी निर्यातकों के मामले में उच्चतम शुल्क लगाने की सिफारिश करने की निर्दिष्ट प्राधिकारी की स्थापित प्रक्रिया के विपरीत है । इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि इस बारे में प्रारम्भिक जांच निष्कर्षों को उपयुक्त रूप से संशोधित किया जाए ।

(घ) आस्ट्रिया, यूक्रेन और चैक गणराज्य के संबंध में पाटन का निर्धारण:-

निवेदन है कि इन देशों के निर्यातक शुरुआती नोटिस का जवाब देने में असफल रहे हैं और इसलिए इन्हें गैर-सहकारी निर्यातक माना जाए । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इन देशों से हुए

आयातों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण के बारे में सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना का उपयोग करते हुए कार्रवाई आरम्भ करके बिल्कुल उचित ही किया है।

12. प्राधिकारी की स्थिति

प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के निर्धारण को शासित करने वाले पाटनरोधी नियमों के अनुबंध- I में दिए गए सिद्धांतों का अनुसरण किया है। वोल्सकी के मामले में प्राधिकारी ने निर्यातक मै0 मित्सुई द्वारा किए गए पाटन के मामले की जांच संबद्ध माल के विनिर्माता मैसर्स वोल्सकी के मामले को साथ में जोड़ते हुए भी की है। एक प्रत्यक्ष निर्यातक के रूप में मै0 वोल्सकी द्वारा किए गए पाटन के मुद्दे की जांच अलग से की गई है।

13. क्षति:-

1. घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए तर्क:-

(क) क्षति का संचयी निर्धारण:-

संचयी निर्धारण के लिए निर्धारित शर्तें (पाटनरोधी नियमों का अनुबंध-II(iii)) यहाँ-(i) प्रत्येक देश से पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक है ; (ii) आयातों की मात्रा (पाटित आयातों की नहीं) न्यूनतम से अधिक है ; (iii) संचयी निर्धारण की उपयुक्तता । ये सभी शर्तें वर्तमान मामले में पूरी होती हैं। इसलिए सम्बद्ध देशों से हुए आयातों से संचयी रूप से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का आकलन करना उचित होगा ।

(ख) संचयी निर्धारण, भले ही जांच की जा रही विभिन्न वस्तुएं समान वस्तुएं नहीं हैं ।

उल्लेखनीय है कि घरेलू उद्योग विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन करता है, जो कि समान वस्तुएं नहीं हैं। घरेलू उद्योग के पास इन वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए समान/परस्परव्यापी सुविधाएँ हैं। पाटनरोधी नियमों के अनुबंध- II (vi) पर ध्यान देने की आवश्यकता है जो निम्नानुसार बताते हैं :-

‘डम्प किए गए आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंध में किया जाएगा, जब उपलब्ध आंकड़ों से उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादकों, बिक्री और लाभ जैसे मानदण्डों के आधार पर उस उत्पादन की अलग से पहचान की जा सकती हो। यदि उस उत्पादन का ऐसी अलग पहचान करना संभव नहीं हो तो डम्प किए गए आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन ऐसे सीमित उत्पाद समूह अथवा उत्पादों के उत्पादन की जांच द्वारा किया जाएगा, जिसमें समान उत्पाद शामिल हों जिनके लिए आवश्यक सूचना दी जा सकती है।’

मौजूद मामले में, भिन्न भिन्न प्रकार के सीमलैस ट्यूबों की जांच की जा रही है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग कई अन्य प्रकार के ट्यूबों का उत्पादन करता है, जिनमें कोल्ड-ड्रून और कोल्ड-पिल्जर्ड ट्यूब या पाइप शामिल हैं। सभी किस्मों के लिए मूलभूत उत्पादन सुविधाएं समान हैं यद्यपि इस हेतु कुछ विशिष्ट उपकरण होते हैं। इसलिए, सीमलैस ट्यूबों की अलग-अलग किस्मों को हुई क्षति का निर्धारण करना न तो व्यवहार्य है और न ही उचित। इसलिए, यह अनुरोध किया जाता है कि घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण उत्पादों के सबसे छोटे समूह या श्रेणी जिसमें समान उत्पाद भी शामिल है, के बारे में संचयी रूप से किया जाए, जिसके संबंध में आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई गई है। तथापि, घरेलू उद्योग ने व्यवहार्य सीमा तक उत्पादन लागत, बिक्री कीमत और लाभ/हानि के संबंध में अलग से सूचना भी उपलब्ध कराई है।

(ग) क्षति संबंधी मानदण्ड

विभिन्न क्षति संबंधी मानदण्डों के संबंध में, घरेलू उद्योग ने उनके द्वारा दर्ज की गई याचिका पर विश्वास किया है। सभी मानदण्ड सामूहिक एवं संचयी रूप से इस बात की पुष्टि करते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। वस्तुतः क्षति को दर्शाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मानदण्ड है:- उद्योग की इष्टतम उत्पादन लागत और इसकी उचित बिक्री कीमत और उद्योग द्वारा प्राप्त की गई बिक्री कीमतें।

(घ) कम मांग, अधिक क्षमता और अक्षम घरेलू उत्पादक:

कुछ विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि देश में सीमलैस ट्यूबों की मांग कम है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। कुछ विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षों द्वारा यह भी तर्क दिया गया है कि देश में संबद्ध वस्तु की अधिक उपलब्धता है। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू उत्पादक अक्षम हैं जिसके रहते उन्हें क्षति हुई है। यद्यपि यह स्वीकार किया जाता है कि संबद्ध वस्तु की मांग कम है, तथापि इससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि और अधिक आयात करने से घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति गम्भीर हो जाएगी। उचित बिक्री कीमत की तुलना आयातों की पहुँच कीमत से करने पर यह पता चलेगा कि आयातों की पहुँच कीमत उचित बिक्री कीमत से काफी कम है। इसके अलावा, उचित बिक्री कीमत की तुलना उद्योग की वार्तविक बिक्री कीमत के साथ करने पर यह पता चलेगा कि उद्योग की वार्तविक बिक्री कीमत के साथ करने पर यह पता चलेगा कि उद्योग उचित बिक्री कीमत से काफी कम कीमत पर बिक्री कर रहा है। इसके अलावा उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना आयातों की पहुँच कीमत के साथ करने पर यह पता चलेगा कि कीमतों में भारी कटौती की जा रही है।

(ड.) गवाएं गए अनुबंध

ओएनजीसी द्वारा यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा गवाएं गए अनुबंधों के संबंध में दी गई सूचना तथ्यतः गलत है। चूंकि कम्पनी के पास सही सूचना उपलब्ध है, इसलिए हम उनके तर्क को सर्वीकार करते हैं और उनके दावों के सत्यापन की जिम्मेवारी निर्दिष्ट प्राधिकारी के ऊपर डालते हैं। तथापि, डीलर बाजार में गवाएं गए अनुबंधों के कारण घरेलू उद्योग के दावे का खण्डन नहीं किया गया है।

(च) सीमा शुल्क

कुछ विरोधकर्ता हितबद्ध पक्षों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि इन उत्पादों पर पहले से ही अधिकतम सीमाशुल्क लगाया जा रहा है, जिसे अभी हाल ही में बढ़ाया गया है। तथापि, मौजूदा निष्कर्ष निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इस संबंध में विगत में दिए गए निष्कर्षों के अनुरूप हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी का यह सतत व्यवहार रहा है कि वह जांच अवधि में विद्यमान सीमाशुल्क के वास्तविक स्तर पर विचार करें। जांच अवधि में इस उत्पाद पर लगने वाला सीमा शुल्क कच्ची सामग्रियों पर लगने वाले सीमाशुल्क के बराबर था। अब भी कच्ची सामग्रियों और तैयार उत्पादों पर लगने वाला सीमाशुल्क का दायरा समान है।

2. ओएनजीसीएल और वोलस्की द्वारा दिए गए तर्क

- प्राधिकारी के लिए यह मूल्यांकन करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से या उत्पादन या खपत के अनुरूप पर्याप्त वृद्धि हुई है। घरेलू उत्पादक द्वारा प्रस्तुत किए गए आकड़े^{भा} डीजीसीआई एण्ड एस द्वारा संकलित किए गए आकड़ों की तुलना में आयातकों द्वारा प्रस्तुत आकड़े ज्यादा सही हैं।
- जाच के अंधीन सीमलैस ट्यूब और पाइपों की खरीद निविदाओं के आधार पर की जा रही है। प्रतिस्पर्धियों ने भी यह माना है कि अगर एक आर्डर भी हाथ से निकल जाता है तो घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होती है। दूसरे शब्दों में, जांच अवधि के दौरान आर्डर को प्राप्त करना ही एक महत्वपूर्ण कारक है और न कि जांच अवधि में हुए वास्तविक आयातों की मात्रा।
- जांच अवधि के दौरान उत्पादन और क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है। घरेलू उत्पादकों की बिक्री मात्रा में वृद्धि हुई थी और अंतिम स्टॉक वास्तविक क्षति का संकेतक नहीं था। इसलिए, वास्तविक क्षति का एक मात्र और सबसे महत्वपूर्ण संकेतक है कीमतों में कमी करना। संबद्ध देशों से प्राप्त कथित न्यूनतम कीमतों से घरेलू उत्पादक उक्त पांचों निर्यातकों द्वारा सूचित की गई

कीमत से कम कीमत रखने के लिए बाध्य नहीं हुए हैं जो कीमतों में की गई कटौती को सिद्ध करने के लिए एक प्रमुख अपेक्षा है ।

4. इन सभी मामलों में खरीद निविदाओं के जरिए की जाती है । प्रत्येक पक्षभव-दरों के बाजार की स्थिति और ऐसी कीमत संबंधी अपने अनुमान के आधार पर सूचित करता है जिसकी अन्य प्रतिस्पर्धात्मकता द्वारा पेशकश की जा सकती है । ओएनजीसी आईर ओआईएल की सभी निविदाओं में निवादा खोलने के पश्चात् वर्ताएं करना प्रतिबंधित है । न्यूनतम निविदा-दाता अन्य निविदाओं की कीमतों को कम कर देगा ।

5. प्रारंभिक निष्कर्ष (पैरा-17) में दो आर्डरों को उद्धृत किया गया है जिन्हें घरेलू उद्योग ने गवाया हुआ बताया है और यह माना गया है कि इनसे वास्तविक क्षति हुई है । ये दोनों आर्डर जांच अवधि से पहले के थे । दिनांक 1.9.1997 के आर्डर संख्या मैट/आईएमपी/154 के संबंध में याचिकाकर्ता ने मूल्य को 70 करोड़ रुपए के रूप में दर्शाया था । वस्तुतः इस अनुबंध का मूल्य 6.47 करोड़ रुपए था ।

6. यह निष्कर्ष कि उक्त देशों से हुए आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी आ रही थी, एक गलत निष्कर्ष है क्योंकि जांच अवधि के दौरान ओएनजीसी द्वारा दी गई सभी निविदाओं में सबसे कम भाव दर घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई है ।

7. सीमाशुल्क संबंधी तत्व निविदा मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण भाग है । विदेशी आपूर्तिकर्ताओं की सीआईएफ कीमतों का मूल्यांकन सीमाशुल्क को शामिल करने और घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई कारखाना द्वार स्तर की कीमतों के साथ तुलना के पश्चात् किया जाता है । हालांकि यह सच है कि प्राधिकारी जांच अवधि के दौरान इन कारकों का मूल्यांकन करेगा, तथापि यह तथ्य, कि इन पाइपों और ट्यूबों की खरीद औएनजीसी और ओआईएल जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों द्वारा की जाती है जोकि भारत के लिए न्यूनतम संभव लागत पर सर्वाधिक जरूरत की वस्तु तेल उपलब्ध कराती है, को ध्यान में रखना होगा और सीमाशुल्क में हुई वृद्धि को मानना पड़ेगा। इस मामले को देखते हुए, प्राधिकारी इस मामले में कृपया एक संदर्भ कीमत का निर्धारण करें ताकि बढ़ी हुई पहुंच मूल्य का लाभ घरेलू उद्योग को न मिले ।

14. प्राधिकारी की स्थिति(क) आयातों की मात्रा

प्राधिकारी नोट करते हैं कि डी जी सी आई एस आंकड़ों के अनुसार 1995-96, 1996-97 और 1997-98(अप्रैल, 97 से सितम्बर, 98 अर्थात् जांच अवधि) के दौरान संबद्ध वस्तुओं की आयात की मात्रा क्रमशः 80,667 किग्रा., 6,91,52,972 किग्रा. और 7,46,82,443 किग्रा. थी। इस प्रकार, संबद्ध वस्तुओं के आयातों में वृद्धि हुई है। डी जी सी आई एस द्वारा संकलित आंकड़े आयातों की कुल स्थिति को दर्शाते हैं और इसलिए प्राधिकारी द्वारा इन पर विश्वास किया गया है। भारत में लाइन/बॉयलर पाइप्स और कास्टिंग/ट्यूबिंग के बाजारों में ओ ई एम मार्केट और डीलर्स मार्केट शामिल हैं। प्रमुख मूल औजार विनिर्माताओं में, जो भारत में संबद्ध वस्तुओं के लिए बाजार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, अन्यों के साथ-साथ सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियां शामिल हैं। ये कंपनियां मुख्यतः अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मक बोली की प्रक्रिया के जरिए संबद्ध वस्तुओं की खरीद करती हैं। आयातकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़े मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों द्वारा किए आयातों से संबंधित हैं जिनमें से केवल ओ एल और ओ आई एल ने आयातकों की प्रश्नावली का जबाब दिया है। ये आयात संबंधी आंकड़े लाइन/बॉयलर पाइप्स के उन आयातों पर विचार नहीं करते हैं जिनकी बिक्री भारत में कुछ व्यापारियों के जरिए भी की जाती है या जिन कास्टिंग और ट्यूबिंग की बिक्री अन्य ओ ई एम विनिर्माताओं को या व्यापारियों को की गई है क्योंकि लगभग सभी उद्योगों को अधिक या कम मात्रा में इनकी आवश्यकता होती है।

(ख) कीमत कम करना और कीमत में मंदी लाना

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का पहुँच मूल्य अधिकतर *** प्रति मी.टन से *** प्रति मी.टन के बीच में था। ये पहुँच मूल्य क्रमशः एम एस एल, के एस टी एल और आई एस एम टी एल के लिए याचिकाकर्ता कंपनियों की इकाई (एम टी) उत्पादन लागत से क्रमशः *** रूपए, *** रूपए और *** रूपए कम थे। एम एस एल, के एस टी एल और आई एस एम टी एल द्वारा जांच अवधि के दौरान याचिकाकर्ता की इकाई बिक्री कीमतें प्रति मी.टी. क्रमशः *** रूपए, *** रूपए और *** रूपए थीं। घरेलू उद्योग की बिक्री वसूली 1996-97 में *** रूपए मी.टन थी जो घटकर 1997-98 में *** रूपए/मी.टन रह गई। 1998-99 के दौरान (सितम्बर, 98 तक) बिक्री कीमत *** रूपए/मी.टन थी और जांच अवधि में *** रूपए/मी.टन थी। यह देखा गया है कि इन कीमत स्तरों पर, याचिकाकर्ताओं को हानि हुई है (संबद्ध वस्तुओं के लिए)। जांच अवधि के दौरान जहां तक वास्तविक आर्डर प्राप्त होने का संबंध है यह देखा गया है ओ एन जी सी एल, के एस टी एल द्वारा दिए गए *** आपूर्ति आर्डरों में से कास्टिंग के ग्रेड जे-55 और एन-80 के लिए *** आर्डर की आपूर्ति की गई। अन्य आर्डर संबद्ध देशों के आपूर्तिकर्ताओं और एम एस एल को और घरेलू प्रसंस्करणकर्ताओं को दिए गए। जैसा कि प्रारंभिक निष्कर्षों में बताया गया है, ओ एन जी सी और ओ आई एल जैसे खरीददारों द्वारा दिए गए आर्डर बड़ी मात्रा के हैं। यह बताया गया है कि एक निर्यातक के हाथ से एक आर्डर निकलने से भारत में घरेलू उद्योग के लिए तीन माह के उत्पादन जितनी हानि हो सकती है। इसलिए, घरेलू उद्योग के पास यह सुनिश्चित करने के सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं था कि किसी निर्यातक को अलाभकारी कीमत मिलने पर भी आर्डर से हाथ न धोना पड़े।

15. क्षति के संबंध में निष्कर्ष

प्रारम्भिक निष्कर्षों के पैरा ज-18 में किए गए उल्लेख के अनुसार यह अभिमत व्यक्त किया जाता है कि:-

- (क) संबद्ध देशों से हुए आयातों की मात्रा, मांग का एक बड़ा हिस्सा है ;
- (ख) याचिकाकृत्ता को अपनी क्षतिरहित कीमत से कम कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य किया गया है, जिसके कारण हानि हुई;
- (ग) आयात से घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी आ रही है ।

16. कारणात्मक संबंध

19. संबद्ध वस्तु की मांग में कमी नहीं आई है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो । दूसरी ओर, मांग में वृद्धि प्रदर्शित हुई है । तथापि, पाटित आयातों के मद्देनजर बाजार में प्रचलित कीमतें अवास्तविक रूप से कम हैं जिससे घरेलू उद्योग अलाभकारी कीमतों पर बिक्री करने के लिए बाध्य हो रहा है । प्राधिकारी यह मानते हैं कि संबद्ध देशों से हुए उन आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है जिन्होंने पिछले तीन वर्षों के दौरान मांग में एक बड़ा हिस्सा हासिल कर लिया है और घरेलू उत्पाद के मूल्यों में कटौती की है जिसके कारण घरेलू उद्योग अपनी क्षतिरहित कीमत से कम कीमत पर बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ है । इसलिए घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति हुई थी ।

15. लगाया गया पाटनरोधी शुल्क

प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से सीमलैस ट्यूबों के हुए पाटन के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति का मूल्यांकन किया है और क्षति मार्जिन पर आधारित सन्दर्भ कीमत की शिफारिश की है, जो कि पाटन मार्जिन से कम है

16. पहुंच मूल्य

प्रचलित सभी सीमा शुल्कों के वास्तविक स्तर और एक प्रतिशत उत्तराई प्रभार तथा दो प्रतिशत हैडलिंग प्रभारों को प्रभारित करने के बाद आयातों के पहुंच मूल्य का निर्धारण करने का प्रस्ताव है ।

असहयोगी निर्यातकों का निर्धारण

असहयोगी निर्यातकों के बारे में निर्यात कीमत का संदर्भ उपयोगकर्ता उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना और डीजीसीआई एण्ड एस के आंकड़ों के आधार पर लिया गया है । सामान्य मूल्य का परिकलन किया गया है । सन्दर्भ कीमत की सिफारिश क्षति मार्जिन के आधार पर की गई है जो कि पाटन मार्जिन से कम है ।

20. अन्तिम निष्कर्ष

प्राधिकारी ने उपरोक्त पर विचार करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि:

- (क) संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सीमलैस ट्यूबों का भारत को सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर निर्यात किया गया जिसके कारण पाटन हुआ ।
- (ख) घरेलू उद्योग को क्षति हुई है;
- (ग) संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण क्षति हुई है ।

21. प्राधिकारी टैरिफ वर्गीकरण संख्या 7304.10, 7304.29 और 7304.39 के अन्तर्गत लोहे (कास्ट आयरन से भिन्न) अथवा गैर अलाय स्टील के हाट फिनिस्ड लाइन पाइपों एवं वायलर पाइपों और अलाय एवं गैर अलाय स्टील के केसिंग और ट्यूबिंग की पाटित श्रेणियों/ग्रेडों के सभी आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं; जिनका परिमाप (बाह्य व्यास) (i) लाइन और वायलर पाइपों के लिए 26 मि.मी. से 273 मि.मी. तक या 10^7 एन बी; (ii) केसिंग के लिए 114.30 मि.मी. से 244.5 मि.मी. या $9\frac{5}{8}$ और (iii) ट्यूबिंग के लिए 48.3 मि.मी. से 114.3 मि.मी. के बीच आते हैं । पाटनरोधी शुल्क आयातों के पहुंच मूल्य और कालम-4 में दी गई राशि के बीच का अन्तर होगा ।

देश/निर्यातक	सीमलैस पाइप की श्रेणी	ग्रेड	राशि (रु./मी.टन)
1	2	3	4
रूस			
1. बोलजस्की पाइप प्लाट	केसिंग पाइप	एन-80 एल-80 पी-110	39,141
2. बोलजस्की पाइप प्लाट, विनिर्माता एवं मै. मितसुई एण्ड कम्पनी लि., टोक्यो, नर्यातक	केसिंग पाइप	एल-80	39,141
3. पैरा-21 में यथा उल्लिखित सीमलैस पाइपों/ट्यूबों की सभी श्रेणियों के सभी निर्यातक	पैरा 21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप		39,141
रोमानिया			
1. पेट्रोटब एस.ए	लाइन पाइप		कुछ नहीं
2. सिल्कोटब एस.ए.	केसिंग पाइप		कुछ नहीं
3. पैरा 21 में यथा उल्लिखित सीमलैस पाइपों/ट्यूबों की सभी श्रेणियों के सभी निर्यातक	वायलर पाइप लाइन पाइप पैरा-21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप		कुछ नहीं कुछ नहीं 36,859

आस्ट्रिया पैरा 21 में यथा उल्लिखित सीमलैस पाइपों/ट्यूबों की सभी श्रेणियों के निर्यातक और बाएस्ट एल्पाइन	पैरा 21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप		36,859
चैक गणराज्य पैरा 21 में यथा उल्लिखित सीमलैस पाइपों/ट्यूबों की सभी श्रेणियों के निर्यातक और नोवाहट	पैरा-21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप		36,859
यूक्रेन 1. मेटल जावोड इमेनी कार्ल लीबेनेरट 2. युजनो ट्रवनी जावोद निकापोल 3. पैरा 21 में यथा उल्लिखित सीमलैस पाइपों/ट्यूबों की सभी श्रेणियों के सभी निर्यातक,	पैरा-21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप पैरा-21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप पैरा-21 के अनुसार सभी प्रकार के सीमलैस पाइप		डीजीसीआई एण्ड एस के आंकड़ों के अनुसार कोई आयात न होने या न्यूनतम सीमा से कम आयात होने के कारण शून्य

22. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के अन्तर्गत सीमाशुल्क विभाग द्वारा यथा ग्रन्तित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अन्तर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे ।
23. उपरोक्तनुसार, प्राधिकारी दिनांक 10.11.99 के प्रारंभिक निष्कर्षों की पुष्टि करते हैं ।
24. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील उपरोक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं स्वर्ण (नियंत्रण) अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

रति विनय झा, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(Directorate General of Anti-Dumping and Allied Duties)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 19th May, 2000

Final Findings

Subject: Anti-Dumping investigations concerning import of Seamless Tubes from Austria, Czech Republic, Russia, Romania and Ukraine.

7/1/99-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 thereof:

A. PROCEDURE

1. The procedure described below has been followed subsequent to the preliminary findings:
 - (a) The Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified Preliminary Findings vide notification dated 10/11/99 with regard to anti-dumping investigations concerning imports of Seamless Tubes from Austria, Czech Republic, Russia, Romania and Ukraine and requested the interested parties to make their views known in writing within forty days from the date of its publication;
 - (b) The Authority forwarded a copy of the preliminary findings to the known interested parties, who were requested to furnish their views, if any, on the said findings within forty days from the date of the letter;
 - (c) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 9/2/99. All parties presenting views orally were requested to file written submissions of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rejoinders, if any. The petitioners and members of the user industry were present at the oral hearing. The exporters from Romania and Russia filed written submissions for the purpose of the oral hearing which they could not attend;
 - (d) The Authority made available the public file to all interested parties containing non-confidential version of all evidence submitted and arguments made by various interested parties;

- (e) The arguments raised by the petitioners and other interested parties have been appropriately dealt with in the preliminary findings and/or these findings and have not been repeated for the sake of brevity;
- (f) In accordance with Rule 16 supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received on the same, have been duly considered in these findings;
- (g) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. ON INITIATION

2. On the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner, the Authority initiated these investigations vide Public Notice dated 21th May, 1999 against dumped imports of seamless tubes originating in or exported from Austria, Czech Republic, Russia, Romania and Ukraine. In the course of the investigations, imports from Ukraine were found to be de-minimis as per data compiled by the DGCIS. Ukraine has therefore been excluded from the scope of these investigations.

3. PRODUCT UNDER CONSIDERATION

The product being dumped in India and subject to investigation in the present case is seamless tubes, pipes and hollow profiles of iron, alloy or non-alloy steel (other than cast iron), other than cold drawn or cold rolled originating from the subject countries of the following description:

- (a) Seamless tubes, of iron or non-alloy steel, not cold rolled, hot finished, of an external diameter not exceeding 273mm or 10"NB also known as boiler pipes or line pipes used in hydrocarbon industry, processing and general engineering industry;
- (b) Casing and tubing of a kind used in drilling of oil or gas of an external diameter not exceeding 244.5mm or 9.5/8".

The subject goods described as seamless tubes/pipes as also line/boiler pipes and casing /tubing are classified under customs sub-heading numbers 73.04, 7304.10, 7304.29 and 7304.39 of Chapter 73 of the Customs Tariff Act, 1975.

(A) Arguments raised by importers (ONGCL):-

1. The products being investigated in the present case can be broadly classified into the following:-
 - (i) Seamless line pipes of a kind used for oil or gas pipeline falling under heading 7304.10 of the Customs Tariff;
 - (ii) Seamless casing tubes of a kind used in drilling for oil or gas falling under heading 7304.29;
 - (iii) Seamless tubing of a kind used in drilling for oil or gas falling under heading 7304.29;

(iv) And Boiler pipes, furnace pipes, super heaters, tubes etc., used in the processing and general engineering industry referred to as other seamless pipes falling under heading 7304.39.

2. The fact that the tubes/pipes falling under these three headings attract the same rate of basic customs duty cannot be a factor for treating the products as one. There are at least four major different product categories under consideration for which dumping has to be determined and separate anti-dumping duties should be notified. M/s Volsky, the exporter from Russia, who had exported only casing pipes of 9 5/8" diameter would have supplied information on normal value, export price and cost of production only for this pipe. Consequently the dumping margin can be determined only for casing pipes and not for tubing or line pipes.
3. The product under consideration which is produced in India alone can be subject to anti-dumping duty. The various grades of pipes produced/not produced is as given below:-

(i) **Production tubing (7304.29)** – All grades are imported. BTC, XL and Premium threads are imported. No grades are produced in India. KSTL and ISTM do not produce production tubing and MSL is excluded from domestic industry. Thread capability in India is only BTC. XL and Premium are not being produced. Production tubing cannot be interchanged with casing tube. The lowest diameter for casing tubes is 4 1/2" whereas the highest diameter for tubing is 4 1/2". There is no overlapping size and hence substitution is impossible. Further application is different.

(ii) **Casing Tubes (7304.29)** – Grades imported are J-55, N-80, L-80, P-110, C-95 and Q-125. Threads imported are BTC, XL and Premium. Grades produced in India are J-55 and N-80. Only KSTL manufactures and supplies these two grades. ISTM does not supply casing tubes. Thread capability in India is only BTC. There is no interchangeability. Tubes of different grades have different chemical composition and other properties and are used in different places of the oil well depending on the environment in the different places of the well.

4. Anti-dumping duty should be restricted, if at all, only to casing pipes of J-55 and N-80 grades with BTC thread. There cannot be any anti-dumping duty on casing pipe with XL and premium threads, the other four grades (L-80, P-110, C-95, Q-125) of casing pipes and on all grades of production tubing.

(B) Arguments raised by Heavy Metal & Tubes Ltd.:-

1. This respondent is a manufacturer of Heat Exchanger and other mechanical tubes using Hot Finished Seamless Pipes as starting raw material. Heat exchanger tubes are mainly required in sizes 25.4mm outside diameter and below. To manufacture these tubes they import Hot Finished Tubes 33.4mm OD or 30mm OD in thickness 2.8mm, 3.2mm, 3.4mm and lower because of the following reasons:-
 - (a) The process cycle time to convert hot finished tubes to cold finished is very short;
 - (b) Cost of production is reduced due to shorter cycle time;
 - (c) Delivery of final product is faster.

If raw material tube in sizes above 33.4mm in diameter is used then the above advantages

would be unachievable making the industry unviable.

2. The domestic industry (ISMT and KSTL which will now be a single company) is a monopoly supplier that too of hot finished sizes not below 38mm outside diameter. The present notification imposing anti-dumping duty on all sizes below 273mm OD in Hot Finished condition should be substituted by incorporating minimum and maximum outside diameter within which anti-dumping duty would be applicable. This range should be above dia 38mm OD to 273mm OD.

3. There should not be any anti-dumping duty on any size of hot finished pipes of material grades like P5 and P91 which are not offered by the domestic hot finished producers.

(C)Oil India Ltd:-

Anti-Dumping duty has been imposed on seamless tubular of all varieties falling within the size range under investigation, even though indigenous capacity does not exist for some of the grades like casing P-110 (except for 5 ½" size), XL, L80 and other premium grades. Since there is no indigenous capacity for these grades as stated earlier, imposition of anti-dumping duty for such grades of tubulars is not giving any protection to indigenous tubular manufacturers. Rather it is going to increase input material cost for oil companies and would unduly benefit the foreign manufacturers located in countries not covered by the investigation.

(D) Arguments raised by exporters –Petrotub- S.A. Roman:-

1. Even though it is clearly noted in the preliminary findings that the domestic industry (KSMT+ISMT) cannot produce hot finished pipes below NPS 1.25" (OD 42.2mm), no provision has been made to exclude anti-dumping duty on hot finished tubes below this size. Whereas, it is a well known fact that many mills in the affected countries can produce hot finished pipes from NPS 0.5" (OD 21.3mm).
2. Similarly no provision has been made to exclude casing pipes of grades L-80, P-110, C-98, Q-125, thread XL from anti-dumping duties, despite the non-availability of these grades from Indian producers.
3. Till today KSMT has not satisfactorily produced a single kilo of seamless pipe in size NPS ten inch (OD 273.0 mm).
4. The Anti-Dumping duty has been imposed on all grades of Seamless Pipes without examining whether all these grades are produced by the Domestic Industry. For example, the alloy steel grade "P.5, P.9, P.91" which are popularly used in refineries, are not produced by domestic industry. Similarly, various specialised grades for mechanical and other applications are not produced by the domestic industry and have to be mandatorily important.
5. Boiler pipes with long lengths of upto 21 meters are used for power projects. These long lengths can also not be produced by the domestic industry but are still eligible for Anti-Dumping duties.

(E) Argument raised by ABB ABL Ltd.:-

1. Line pipes, Casing pipes for oil exploration, Boiler tubes and pipes etc. are independent products and hence it is felt that these products cannot be treated as like product for the purpose of determination of anti-dumping duty or for determining the material injury to the domestic industries.

2. ABB ABL Ltd. is one of the premier designer and manufacturer of high pressure steam generating units with accessories for various thermal power plants & projects, industrial plants, cement making machinery, electrostatic precipitators, foundry items etc. We import seamless carbon steel and alloy steel tubes and pipes of smaller and bigger diameters ranging from 26.9 mm to 559 mm to various specifications and grades for manufacturing pressure parts of the high pressure boiler units but we do not import tubes and pipes from any of the above five countries.

(F) Reliance Industries Ltd. (Oil & Gas Division):

Reliance Industries hold 30% participating interest in Panna – Mukta and Tapti Projects along with ONGC (40%) and Enron (30%). Enron Oil & Gas India Ltd. is the operator for the joint venture. In so far as E & P activities are concerned we agree with the views contained in response of Oil and Natural Gas Corporation, page 13 to 18 of preliminary findings.

G. Arguments raised by Domestic Industry:-

1. It has been argued by various opposing interested parties that a number of grades/sizes of the subject goods are not being produced in India and, therefore, must be excluded from the scope of the present investigations. As long as the Indian industry has capacity and capability to produce like article to product under consideration, the item should attract duty. Further like article has also been well defined under the Rules which does not restrict to identical article.

2. The domestic industry has offered the following arguments with regard to the scope of the investigations:-

(a) Grades which the Indian industry is capable of producing cannot be excluded:- So long as the Indian industry has capacity and capability to produce like article to what is being imported in the country, the item cannot be exempted and has to be covered within the scope of the investigations.

(b) Grades being produced in India but not by all companies in India:- It has also been argued that some of the models are not being produced by some of the participating companies. So long as like article is being produced in India, the model in question cannot be excluded.

(c) Grades for which no allegation was made by domestic industry and which can be excluded from the scope of the present investigations:- The grades for which no allegation was made by domestic industry and which can be excluded from the scope of the present investigations are:-

Line pipe/boiler pipe:- The following models in the alloy steel category:
T5, T9 & T91 as well as P5, P9 & P91 ASTM A 179 (CD)

ASTM A 2+3 (Alloy)

ASTM A 335 (Alloy)
 ASTM A 199 (Alloy)
 ASTM A 200 (Alloy)
 ASTM A 209 (Alloy)
 ASTM A 602 (Alloy)

(ii) **Line pipe/boiler pipe** :All models of stainless steel as raw material.
 (iii) **Drill Pipe** :- All types of drill pipes.

(d) **Grades which are being produced in India but from different process**:-Line pipe/boiler pipes in size range of $\frac{1}{2}$ " and $\frac{3}{4}$ " dia hot finished are not being produced by the Indian industry. These models however can be produced by the Indian industry through the cold drawn process. These models can be produced by the hot process by some of the producers in the subject countries. These models produced using hot finished or cold drawn process however result in products having similar physical and chemical characteristics are different in terms of the manufacturing process beyond the basic process of manufacturing and can be employed for similar functions and usage. The two are in fact technically and commercially substitutable. However the cost of production through cold drawn process is slightly more than through the hot finished process, though the two are traded at similar prices. Since the goods being produced by the Indian industry are technically and commercially substitutable with the goods imported (Produced using hot finished process) it is submitted that these are required to be included within the scope of the present investigations.

(e) There are a number of models which can be produced by Indian industry by supplementing their efforts. For instance, KSTL has facilities for production of casing /tubing upto $9\frac{5}{8}$ ". However, for L80, C95, P110 and Q 125 grades, they have to get a very small part of the job done outside. KSTL has not quoted in the past against ONGC tenders for such models because of the unfair dumped prices. ONGC is aware that KSTL has offered for $9\frac{5}{8}$ " P-110 grade to ONGC and the volume involved is substantial. Whether a company undertakes entire production itself or gets a part of the same done from outside is entirely an issue left to the discretion of the industry. The Designated Authority while assessing the fair selling price may take into account the cost on account of sub-contracting.

4. Examination of product under consideration by Authority:-

The Authority has carefully considered the submissions and rejoinders of all interested parties. In general, "pipe" is a term used to designate any long hollow body used for conducting gases or liquids. Restricted to the steel industry, the term is one that is applied to all tubular products intended for the purposes for which such products are ordinarily used, as for conducting fuel, gas, steam, oil, etc.

The above does not imply that all tubular products by virtue of their general definition are like articles. Since tubes/pipes should be adapted to the kind service they are expected to render, there are different varieties of pipes. Seamless pipes with a variety of special properties have been developed to meet the needs of the oil industry. The casing for deep oil wells requires

seamless pipe having a high resistance to collapse to withstand the high external pressures. Other classes of seamless pipe and speciality tubing made for the oil industry include oil well tubing and line pipe. The oil-refining, chemical and high-pressure-steam industries also demand special seamless pipe.

Billets are referred to as semi-finished steel because they form the starting material for the production by mechanical treatment (e.g. hot rolling etc.) of finished steel products that include tubular products. Many of these products require some form of heat treatment at the steel mill primarily to effect changes in mechanical properties which will render the material suitable for the intended purpose.

The product under consideration has therefore been analyzed not only from the angle of basic manufacturing process but also after considering a number of other factors including (I) physical characteristics of different categories and grade's of pipes, (viz., chemical composition, and mechanical properties such as tensile strength, yield resistance and elongation); (ii) special operations (viz.,heat treatment) required in the manufacture of speciality grades of casings and tubings; (iii) the end-use to which various categories of pipes/tubes are subjected; (iv) interchangeability of the products; (v) the perception of customers and (vi)tariff classifications.

5. LIKE ARTICLES

(A) Arguments raised by importers (ONGCL):-

The term like article as defined under Rule 2(d) has two branches. The first branch is to identify for each product which is alleged to be dumped the domestic producers of a product which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped. The second portion of rule 2(d) provides that if there are no producers who produce an identical article, then producers who produce an article that has characteristics closely resembling the product under consideration may file the application against the alleged dumping of the product under consideration.

1. Domestic industry for casing- In respect of casing tubes, KSTL produces an article which is identical or alike in all respects to the imported casing tubes of J-55 and N-80 grade. MSL is excluded from the category of domestic producer and ISTM has not been empanelled as a supplier nor does it supply casing tubes. Thus, in respect of casing tubes the only domestic producer who has the standing to file the application is KSTL and none else. Any analysis of material injury to the domestic industry due to the alleged dumping of casing pipes has to be studied only with reference to KSTL and the inclusion of ISTM for this purpose is bound to distort the injury picture.

2. Domestic industry for tubing- In respect of production tubing, neither KSTL nor ISTM has the capacity to produce production tubing. The Authority has noted this fact as well. Consequently production tubing should be excluded from the scope of the investigation. Thus, corresponding to each product under consideration, the domestic industry which has the locus standi to file the petition is different and consequently the material injury analysis is different for different products. This is more so when line pipes cannot be substituted with casing pipes/ production tubing, casing tubes and production tubing cannot substitute each other and boiler

tubes cannot be used where casing , production or line pipes/tubes are used.

(B) Arguments raised by Domestic Industry:-

There is no significant difference in goods produced by the three participating companies (viz., MSL, KSTL and ISMT) and goods exported from the subject countries which can have an impact on price. The consumers have used the two interchangeably and thus the two are technically and commercially substitutable.

(C) Examination of Like Article by Authority:-

The Authority observes that in placing orders, all buyers are required to describe the desired material adequately under the specification of the pipe/tube depending on end-use. An important factor in determining the like product would be to examine its end-use substitutability. If a purchaser of a casing pipe would readily buy a line pipe if the prices of the two were similar then these two categories of pipes could be clubbed as one like article. Switching from one product to another involves a determination of whether the two products are similar in characteristics and end-uses.

Casing, tubing and drillpipe are referred to in the industry as oil-country tubular goods (OCTG) and are governed by the API under Specifications 5A, 5AC and 5AX. The physical, chemical and mechanical properties (which include tensile strength, yield resistance and elongation) of line pipes, casings and production tubings differ depending on end use. As line pipes are not used for extraction purposes, they cannot substitute casings in the well and do not possess the tensile strength, yield resistance or hardness of casing pipes. Casings are pipes run from the surface and intended to line the walls of a drilled well. Production tubings serve as exhaust or delivery ducts and for that purpose are inserted into casings in a productive well. Hence production tubings are not interchangeable with either line pipes or casings.

The chemical requirements for API 5L line pipes include the specified percentages of carbon and manganese besides phosphorus and sulphur. Boiler pipes contain carbon, manganese, phosphorus, sulphur and silicon. Yield and tensile strength of line and boiler pipes have specified range.

Deeper wells require speciality casings that possess the requisite hardness and the strength to withstand high pressures at greater depths and varying surrounding sub-strata. Grades such as H-40, J-55, K-55,& N-80 represent the lowest strength and those of P-105, P-110, the highest strength grades. The range of yield strength is much tighter for the 5AC grades such as L-80 versus N-80. L-80 grade tubulars offer high strength for deep well applications.

Grades J55, N80, H40 and K55 (Group 1 of casing pipes) have phosphorous and sulphur content. Whereas L80, C90, C95 and T95 grades (Group 2) contain carbon, manganese, molybdenum, chromium, nickel, copper and silicon in addition to phosphorus and sulphur. P-110 and Q 125 belong to Groups 3 and 4 respectively. Higher strength tubulars are obtained by alloying with chromium and molybdenum. However heat treatment of all these materials is critical and is more detailed for grades C-75, L-80 and C-95. The tensile and hardness requirements also differ.

In view of the above, the Authority notes that seamless pipes can be broadly categorized into line, boiler, casing and tubing having separate end-uses.

6. On Standing:-

Argument raised by Domestic Industry:

1. The petition was filed by Association of Seamless Tubes Manufacturers on behalf of the three participating companies viz. MSL, KSTL and ISMT. There are six companies in India who have created capacities for Seamless Tubes production. TISCO, Remi Metals and BHEL are the other three companies who have the capacity for production of the subject goods. The petition is supported by Remi Metals. The Designated Authority has determined the locus as follows:

- (i) Remi Metals and BHEL have been considered as importing the subject goods and thus have been excluded.
- (ii) MSL has been considered as related to Jindal Drilling and Industries Ltd. that has important large volumes of the subject goods from the named countries.
- (iii) The production of TISCO has been considered for determining the locus.

2. Domestic Industry comments as follows:

- (i) Imports from Remi Metals and BHEL : Domestic Industry agrees with the findings of the Designated Authority that these companies have imported the subject goods and therefore should be excluded from the scope of the present investigation. BHEL is largely a captive consumer of the subject goods. Production of BHEL is required to be excluded from the eligible production.
- (ii) The Designated Authority has considered the production of TISCO in the eligible production. Though there is no implication with regard to the standing of the petitioners to file the present petition whether TISCO is considered within the eligible production, as the standing conditions are satisfied in any event, it is submitted that while initially TISCO conveyed verbally that they would be supporting the petition it was later considered more appropriate by them to remain neutral as they were not at present producing the subject goods. TISCO may therefore be excluded.
- (iii) It is submitted that MSL cannot be treated as related to an importer and cannot be excluded from the scope of the present investigation. A discretion has been provided to the Designated Authority in the amendment of the Anti-Dumping Rules dated 15.7.1999 to decide whether or not a producer who is related to an importer, exporter or itself is an importer of the alleged dumped goods should be included in the investigations. The Designated Authority in the case of PSF, held that though Reliance Industry itself had imported the subject goods it qualified to be included within the scope of domestic industry. Similarly, in case of Nylon Tyre Cord Fabric, the DA held that SRF qualified to be included within the scope of domestic industry inspite of the fact that it was related to an importer. In the instant case, the petitioner company has itself not imported any volumes and the injury assessment would not have got biased in any way. It is submitted in this connection that :

- (a) JDIL and MSL are public limited companies and are not related under any provision of the Company's Act, 1956. None of them is either a related company or a subsidiary of the other one in terms of Section 4 of the Companies Act, 1956. They were

neither under the same management in terms of Section 370 (1B) of the Companies Act, 1956 nor were in the same group in terms of Section 372 (11) of the Companies Act, 1956.

(b) The main business carried on by MSL and JDIL are different. MSL is engaged in

manufacture of Seamless Pipes where as JDIL is mainly engaged in off-shore oil well drilling. It is also engaged in a limited extent in threading, end-finishing, cold pilger, heat treatment, etc. of seamless pipes. Jindal has imported all the material from Volzhsky Pipe Plant who has cooperated with the Authority. The volumes imported by the company are in the region of ***MT, which constitute an insignificant proportion of the Indian demand.

(c) The day-to-day functioning of JDIL is conducted by the Wholetime Director subject to the control of the Board of Directors of the company. Likewise, the day-to-day functioning of MSL is conducted by the Managing Director subject to the control of the Board of Directors of the company. Both the companies have their own professional Board of Directors. It is evident from the constitution of the Board of Directors of the two companies that there is only one common Director in the Board of the two companies who is Shri D.P.Jindal. The board cannot take any decision unless the decision is approved by a minimum of two directors in MSL as is also the case with JDIL. It is submitted that the common Director cannot in any situation influence the decision as he lacks necessary quorum.

(d) Public Limited companies like MSL and JDIL are basically run by the Board of Directors who control all aspects of business. Since there is only one common director in the board of the two companies, there is no way one company can exercise direction or restraint over the other. One the important facts to note is that JDIL has imported the sizes which are not produced by MSL.

7. Arguments raised by ONGCL and Volszkhy:

The investigation in this case was initiated on 21.5.1999 and on that day the unamended rule 2 (b) was in force. This rule did not give any description to the Designated Authority and every domestic producer who is related to the exporter or importer or who has imported the alleged dumped article had to be excluded from the purview of the term "domestic industry". The fact that Maharashtra Seamless Ltd. is related to an importer of the alleged dumped article was brought to the notice of the authority by ONGCL & Volszkhy. The European Council Regulation on anti-dumping, in addition to defining the term "related" specifies a company which holds more than 5% of the shares in another, as related to the other. The definition of the term "related" as used by the European Commission is extracted below:

"For the purpose of completing this questionnaire, a company should be considered to be related if it holds directly or indirectly more than 5% of your capital or otherwise has controlled over your company or if your company holds more than 5% of its share capital or you otherwise control it. Further more, companies under the same holding are considered to be related". In fact the supply by the JDIL of pipes imported from the countries under investigation compete in the same market as the pipes supplied by MSL and hence MSL has to be excluded.

8. Examination by Authority:-

1. The petition has been filed by the Association of Seamless Tubes Manufacturers on behalf of M/s Maharashtra Seamless Ltd., M/s Kalyani Seamless Tubes Ltd., and M/s Indian Seamless Metal Tubes Ltd.
2. It was brought to the notice of the Authority after the initiation of the investigation, that Maharashtra Seamless Ltd. is not an eligible domestic producer of seamless tubes/pipes as they are related to M/s Jindal Drilling and Industries Ltd.(JDIL) an importer and supplier of the subject goods from the named countries, during the period of investigation.
3. The petitioners have stated that JDIL and MSL are public limited companies and are not related under any provision of the Company's Act, 1956. None of them is either a related company or a subsidiary of the other one in terms of Section 4 of the Companies Act, 1956. They were neither under the same management in terms of Section 370 (1B) of the Companies Act, 1956 nor were in the Same group in terms of Section 372 (11) of the Companies Act, 1956.
4. The petitioners have stated that the main business carried on by MSL and JDIL are different. MSL is engaged in manufacture of Seamless Pipes where as JDIL is mainly engaged in off-shore oil well drilling. It is also engaged in a limited extent in threading, end-finishing, cold pilger, heat treatment, etc. of seamless pipes. Jindal has imported all the material from Volzhsky Pipe Plant who has cooperated with the Authority.
5. It has been argued by the importers and other interested parties that M/s MSL had imported the subject goods during the period of investigation and its sister concern M/s Jindal Drilling had imported ***Mt of the subject goods from M/s Volzhsky Pipe Plant during the period of investigation. However, M/s MSL has subsequently clarified that the copy of reference by MSL to ONGCL regarding Tender Enquiry No. MAT/IMP/252/D-II/98-99 due on 19/2/98 for supply of 9.5/8"OD Seamless Steel Casing Pipes, for import of 1,91,155 mts. of plain end seamless pipes and coupling stock (mother pipes) from various API approved mills including those of M/s Petrotub (Romania) and M/s Vitkovice (Czech Republic) for supply of tendered items viz., 9.5/8"OD, BTC, Gr J-55, 40PPF as per API 5CT R-III Seamless Casing Pipes was only an offer that did not materialise and there was no imported supply by MSL of the subject goods stated in the tender enquiry. The Authority therefore notes that M/s MSL, a petitioner company, did not effect any imports of the subject goods during the period of investigation.
6. While on the date of initiation, the unamended Rule 2(b) was in force a discretion was provided to the Authority through an amendment in Rule 2(b) during the course of the investigations. The relationship between MSL and Jindal Drilling comes into focus on account of imports of the subject goods by Jindal Drilling. While the petitioners have argued that the volumes imported by Jindal Drilling constitute an insignificant proportion of the Indian demand, the Authority notes that the quantity imported by Jindal Drilling constitutes 1.40% of the total imports of casing pipes alone. The insignificant quantity imported would not justify the exclusion of M/s MSL from the scope of domestic industry. Rule 2(b) clearly states that "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the production of the

like article... or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article..." The Authority notes that Maharashtra Seamless Ltd. is the largest manufacturer of seamless steel pipes and tubes in India with a production capacity of 50,000 MT per year. They have facilities to manufacture OCTG range in higher grades like N-80, L-80, C-95, P-110 and Q-125.

7. The domestic industry at the time of preliminary findings was constituted of M/s Kalyani Seamless and M/s Indian Seamless who accounted for 66.69% of the total domestic production of the subject goods and thereby had the required standing to file the petition even prior to the amendment in the Anti-Dumping Rules on 15/7/99. Although the case was initiated on a date on which the unamended Rule 2(b) was in force, the Authority has exercised the discretion subsequently allowed by the amendment in the said Rule particularly in view of the facts available on record. After careful consideration of the aforesaid facts, the Authority holds that MSL also qualifies to be part of domestic industry which is therefore constituted of M/s Maharashtra Seamless Ltd, M/s Kalyani Seamless Ltd, and M/s Indian Seamless Metal Tubes Ltd., for the purpose of these investigations.

9. DOMESTIC INDUSTRY:-

The petition has been filed by the Association of Seamless Tubes Manufacturers on behalf of M/s Maharashtra Seamless Ltd., M/s Kalyani Seamless Tubes Ltd., and M/s Indian Seamless Metal Tubes Ltd. Other domestic manufacturers of the subject goods are Tisco, Remi Metals and BHEL.

The above mentioned six companies have created capacity for production of seamless tubes. BHEL has created capacity primarily for captive consumption. It is noted that Remi Metals has imported 7884.79MT of the subject goods from the subject countries during the period of investigation. BHEL has also imported the subject goods but from sources other than the listed countries. After careful consideration of the above, it was decided by the Authority to exclude Remi Metals and BHEL from the scope of domestic industry in view of captive consumption by BHEL and the substantial imports made by Remi Metals of the subject goods from the named sources. Tisco has suspended production and is not a supporter of the present petition.

As stated at para 8 of these final findings, the domestic industry is constituted of M/s Maharashtra Seamless Ltd., M/s Kalyani Seamless Ltd., and M/s Indian Seamless Metal Tubes Ltd., who account for 100% of the total eligible domestic production of the subject goods and thereby have the required standing to file the petition under the Rules.

10. DUMPING:-

(A) Romania

1. Arguments raised by exporter, M/s Petrotub:-

(a) Normal Value

In the sales price structure for domestic sales, it is stated that all Petrotub domestic sales were on ex-factory delivery terms so that no other charges were deducted afterwards. Prices were according to negotiated contracts; no discounts were granted and no commission was paid. The

ex-factory price is not stated. The total domestic sales of Grade B during the period investigated was *** at a value of USD***. The price per ton comes to USD ***. The total quantum of domestic sales of P-110 was ***tons at a value of USD***. The price per ton comes to USD ***

The total factory cost (of domestic sales) of Grade B is stated to be USD ***/ton and net profit is *** USD/ton. The unit selling price is ***USD/ton. The factory cost (of domestic sales) of P-110 is ***USD/ton and net profit is ***USD/ton. The unit selling price is USD ***/ton.

(b) Export Price

The ex-works level price for Grade B as stated in the response is USD ***/ton. Delivery term is on C&F. Charges claimed are on account of inland freight (**USD/ton), storage and handling (**USD/ton), custom commission @ ***USD/ton and trader commission @***USD/ton. Overseas freight is USD ***/ton. The average contract price for Grade B works out to USD ***/ton. The Authority has examined the transaction wise details to the extent made available by the exporter.

The ex-works level price for P-110 is USD ***/ton as stated in the response. Delivery term is on FOB. Charges claimed are on account of inland freight (**USD/ton), storage and handling (**USD/ton), custom commission @ ***USD/ton .Trader commission and overseas freight are nil. The Authority has taken overseas freight as ***USD/ton. The contract price for P-110 works out to USD ***/ton.

It is seen from the Profit and Loss Account submitted by the firm that they have incurred losses. In view of the above and in the absence of a stated ex-factory domestic price the constructed cost of production has been adopted for determination of normal value. The constructed cost of production is USD ***/Mt.

(c) Dumping Margin

Given the normal value at USD ***/ton and the ex-factory export price of Line Grade B at USD ***/ton , the dumping margin comes to ***/ton (which is 61.4% of export price).

Given the normal value at USD ***/ton and the ex-factory export price of P-110 at USD ***/ton , the dumping margin comes to *** /ton (which is 25.3% of export price).

2. Arguments raised by Silcotub S.A.:-

As stated at Para I.(II) of the Preliminary Findings, out of the total sales (domestic + export) of ***tons of grade 73.04.10.10, exports to India accounted for only 4.48% whereas exports to third countries accounted for 64.88%. Likewise, exports for grades 73.04.39, 73.04.10 and 73.04.29 exports to third countries accounted for 78.2%, 76.4% and 26.15% respectively. However, the exporter has stated vide Appendix 4-D that exports to countries other than India have been at a loss. Exports to India are claimed to have been at a profit. The financial

information in the form of Profit & Loss figures is not substantiated with documentary evidence and is hence rejected by the Authority.

(a)Normal Value

In the sales price structure for domestic sales, it is stated that they have no charge beyond ex-factory level. Consequently no charges have been shown on account of packing, inland freight, insurance, storage, handling and taxes. No discounts were offered. The sale prices showed against 73.04.39 and 73.04.10.10 are USD *** and *** respectively.

In Appendix 4-B (Factory cost and profit of domestic sales), the average ex-factory cost for the two grades is USD ***/ton. Since the exports to third countries which account for the bulk of sales are at a loss, domestic sales that account for 30.62% (for grade 73.04.10.10) and 18.57% (for grade 73.04.39) could not be at a profit. In the circumstances, the Authority is constrained to adopt the constructed cost of the subject goods which is USD ***/ton.

(b)Export Price

The price at ex-factory level for grade 73.04.10.10 is USD ***/ton, as stated.. Discount is ***USD. Charges (per ton) after ex-factory and before FOB include inland freight (**USD), handling ***USD, customs duties ***USD, others ***USD. No charges have been claimed after FOB. The Authority has taken overseas freight is taken as USD ***/ton. The list price for grade 73.04.10.10 works out to USD ***/ton.

The ex-factory price for grade 73.04.39.91 is USD ***, as stated in the response. Discount is ***USD. Charges (per ton) after ex-factory include inland freight at ***USD, handling ***USD, Customs duties ***USD, Others ***USD. Overseas freight is @USD ***/ton. The list price for grade 73.04.39.91 is USD ***/ton as stated.

It was noted that export prices to third countries are the same as the prices to India.

(c)Dumping Margin

Given the constructed cost at USD ***/ton and the ex-factory export price of line pipe as ***/ton USD, the dumping margin comes to ***/ton (which is 56.7% of export price).

Given the constructed cost at USD ***/ton and the ex-factory export price of boiler pipe as ***USD, the dumping margin comes to ***/ton (which is 42.7% of export price).

(B) Russia

1. Arguments raised by Volzhsky Pipe Plant:-

(a) Normal Value

It is stated by the exporter that all prices are at ex-factory. Hence there are no deductions. There are no discounts that are offered on the domestic market and there are no charges after ex-factory on account of inland freight, insurance, storage, handling , taxes etc. The ex-factory price in Rbl/ton claimed is *** or USD *** at an average exchange rate of 6.46Rbl=1USD. The quantity sold in the domestic market (in tons) was *** during the period of investigation.

1414G2/2000-7

It is submitted that the ex-factory cost of the product is *** rbl per ton or USD *** and the net profit before tax is *** rbl or USD ***. The unit selling price is *** rbl or USD ***.

However a perusal of the profit and loss accounts submitted by Volzhsky shows that the company has incurred overall operating losses. The Authority is therefore constrained to adopt the constructed cost of the subject goods which is USD ***/MT.

(b) Export Price

Volzshky has stated that they had supplied only casing pipes of 9.5/8"OD to India during the period of investigation. No other category of pipes was supplied. The total exports to India by Volzskhy Pipe Plant during the period of investigation was 18281 tons. Exports to India constitute 71.4% of total sales of the company.

In the sales price structure for exports to India, an average of Rbl *** has been claimed as packing charges after ex-factory and before FOB. An average of ***Rbl has been charged as rail road rate, ***rbl as storage and ***rbl on account of customs clearance. Charges after fob are on account of overseas freight and forwarding which are ***rbl. The Authority has considered insurance charges at ***% or USD *** and stevedoring charges at USD *** thus bringing the total charges to USD***. The weighted average ex-factory export price is USD ***. The Authority has examined the transaction wise details to the extent made available by the exporter.

It is submitted that the ex-factory cost of the product is *** rbl per ton or USD *** and the net profit before tax is ***rbl or USD ***. The unit selling price is *** rbl or USD***.

(c) Dumping Margin

Taking the constructed cost at USD ***/ton and the ex-factory export price at USD ***/ton for casing pipes the dumping margin comes to ***/ton (which is about 107.2% of export price).

2. Arguments raised by M/s Mitsui & Co. Ltd.,:-

(a) Mitsui & Co., Ltd., Tokyo, informed the Authority that as a supplier of the subject goods to ONGC/OIL India Ltd. and other government corporations engaged in the oil exploration business in India, they are an interested party in these investigations. In its response to the Disclosure Statement, Volshsky submitted that it had supplied *** MT of casing pipes to Mitsui at USD *** (FOB) or USD ***/ton. The said quantity was exported by Mitsui to ONGCL at USD ***/ton (FOB). The Authority notes that there is an abnormal increase in the unit price as quoted by Mitsui to ONGC from that of the price quoted by Volzhsky to Mitsui for which no details have been furnished. As a trading house Mitsui would have been entitled to commission. However, Volsky in its response to the questionnaire has not claimed adjustments towards traders commission and Mitsui had not filed a response to the questionnaire. For want of any justification towards the significant increase in the export price for the subject goods supplied by Mitsui to ONGC, the Authority has adopted for Mitsui the export price and adjustments thereon as considered for Volsky.

(b) Dumping Margin

Taking the constructed cost at USD ***/ton and the ex-factory export price at USD ***/ton for casing pipes the dumping margin comes to ***/ton (which is about 107.2% of export price).

(C) Non-cooperative Exporters

As stated at Para 11 of the Preliminary Findings, the Authority sent a questionnaire to the known exporters from the subject countries. The Authority notes however, that the exporters from Austria, Czech Republic and Ukraine have not responded to the questionnaire to furnish the relevant information. Therefore there are no claims made by these exporters with regard to normal value and export price. The Authority has therefore treated them as unco-operative and has been constrained to rely upon constructed price and best available information with regard to normal value and export price respectively, as provided by the petitioner.

11. Dumping:-**Argument raised by the Domestic Industry:-**

As per notification No. 44/99-CUS (NT) dated 15.7.99 the normal value in case of Russia, Czech Republic and Ukraine should be determined in accordance with the provisions of the said notification.

(1) Volzhsky Pipe Plant :-

(i) The normal value in case of Volzhsky in particular and all the producers in Russia in general is required to be assessed in accordance with the amended rules. Domestic Industry analysis of this respondents cost of production was not disputed by the exporter and observations on cost of production and various elements on cost of production remained undisputed at the time of the oral hearing.

(ii) The exporters has stated in annexure I that exports to India were 18284 M.T. However the same has been claimed as 17073 M.T. in Appendix 2B. The company has not given month wise details of exports made to India. At the same time, total volume exported has been shown in this Appendix.

(iii) The estimates of the cost of production, selling price and profits claimed by the company and comparison with Indian producers is being provided on "confidential" basis. The information filed by the company confirms the impression that the cost structure of the producers in non-market economy countries such as Russia and Ukraine are unreliable.

(iv) The company has disclosed the exchange rates in various months in the investigation period the local currency as it may be seen has fluctuated greatly.

(v) List of the owners/principal share holders of the company has been claimed confidential.

(vi) The company was given certificate of incorporation only in April, 1998 where as the present investigation is April, 97 to September, 98. This means that the companies was not even incorporated in the whole of the investigation period . The company however appears to have been in existence may be for more than a decade. The status of the company prior to April, 98 is not clear.

(2) Dumping and Dumping Margin in case of Romania:-

While it is appreciated that the exporters can claim information as confidential while responding the questionnaire, the entire response in the present case seems to have been claimed confidential. This is contrary to the provisions of Rule 7. The exporters do not seem to have provided the information with regard to transaction wise details of their sales in the domestic market.

(A) Silcotub SA:-**Normal Value:-**

(i) In the Preliminary Findings of the Designated Authority it is stated that majority of sales are exports to third countries which are at a loss. It has been further argued that export price to third countries are as at the same prices to India and exports to India are at a profit. When the majority of the sales are at a loss, the other sales would also not permit recovery of cost of production, when all the sales are at similar prices. It is further submitted that the exporter has not provided domestic cost details. Even if it is admitted that the selling prices permitted recovery of cost of production on weighted average basis, it is submitted that the same is insufficient and the exporter is required to establish that all the sales in the home market were in the ordinary course of trade.

Export Price:-

The exporter has not disclosed any expenditure on account of inland freight within Romania. No charges have been claimed after FOB. Evidently, the goods have been exported by some company after buying the goods from the producer. Such being the case, the exporter has not established that the goods have been exported to India at the prices claimed. Further, it has been demonstrated by the exporter that there is no compensatory arrangement between the buyer and the seller.

(B) Petrotub S.A.

There seems to be no information filed by the exporter with regard to domestic sales transactions. Such being the case, there seems to be insufficient claim by the exporter and the response is required to be rejected on this account alone. It is not understood how the exporter can claim that there was profits on the sales in the home market and exports to India when the company has suffered overall losses. Since the exporter seems to have produced a number of other types, apparently the exporter has claimed that it has suffered heavily on other grades and made losses in these grades which have been exported to India. It is required to be established by the exporters that the sales in the home market were in the ordinary course of trade and export price can be considered representative and is not required to be constructed.

It was argued at the time of the hearing that the Romanian producers are able to compete after paying 15% towards sea freight and incurring expenses on other accounts including commission and service charges to trading houses. This is precisely the point sought to be made by the domestic industry that the Romanian producers are incurring such huge expenditure and it is not possible that these producers can make profits at such prices. It has been very clearly held by the Designated Authority that the exporters from Romania were making losses and substantial sales of a producers were at a loss. Dumping is inbuilt in their own claim.

(3) Duty on non-cooperative exporters:

It is found from the preliminary findings that the anti-dumping duty on residual category in case of Romania has been determined as the lower of the cooperative exporters. This is contrary to the established practice of the Designated Authority to recommend highest duty in case of non-cooperative exporters. The Designated Authority is, therefore, requested to suitably modify the preliminary findings in this regard.

(4) Determination of Dumping in respect of Austria, Ukraine and Czech Republic:

It is submitted that the exporters from these countries have failed to respond to the notice of initiation and should be considered as non-cooperative exporters. The Designated Authority is fully justified to proceed with the best information available with regard to determination of normal value, export price and dumping margin in respect of imports from these countries.

12. Authority's Position

The Authority has followed the principles governing the determination of Normal Value, Export Price and Margin of Dumping as laid down in Annexure I of the anti-dumping rules. In the case of Volzhsky, the Authority has also examined the issue of dumping by the exporter M/S Mitsui, in conjunction with that of the manufacturer of the subject goods M/S Volzhsky. The issue of dumping by M/s Volzhsky as a direct exporter has been examined separately.

13. INJURY:-

1. Argument raised by domestic industry:-

(A) Cumulative Assessment of Injury:

The conditions prescribed on cumulative assessment (Annexure II (iii) to the anti-dumping rules) are (I) the dumping margin from each country is more than de-minimis; (ii) the volume of imports (and not dumped imports) is more than de-minimis; (iii) appropriateness of cumulative assessment. All three conditions are satisfied in the present case. It would, therefore, be appropriate to assess injury to the domestic industry cumulatively from the imports from the subject countries.

(B) Cumulative Assessment even if various goods being investigated are not like article:

It is submitted that the domestic industry produces various goods which are not like articles. The domestic industry has common /overlapping facilities for producing these goods. Attention is requested to Annexure II (vi) of the anti-dumping rules which states as under:

“The effect of dumped imports shall be assessed in relation to the domestic production of the like article when available data permit separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers, sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effect of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or range of products, which includes the like products, for which the necessary information can be provided”.

In the instant case, there are different types of seamless tubes being investigated. Further, the domestic industry produces a number of other types of tubes, which include cold drawn and cold pilgered tubes or pipes. The basic production facilities for all the types are common, even though, there are certain dedicated equipment. It would therefore be neither feasible nor appropriate to assess injury to individual types of seamless tubes. It is therefore requested that to the domestic industry may be assessed cumulatively for the narrowest group or range of products which include the like product, for which necessary information has been provided. However, domestic industry has also provided separate information to the extent feasible with regard to the cost of production, selling prices and profit/loss.

© Injury Parameters:

With regard to various injury parameters, domestic industry relies upon the petition filed by them. All the parameters collectively and cumulatively establish that the domestic industry has

suffered injury. In fact the most important parameters to indicate injury is the optimum cost of production of the industry and its fair selling price and the selling prices realised by the industry.

(D) Low Demand, excess capacity and inefficient domestic producers:

It has been argued by some of the opposing interested parties that the demand of seamless tubes in the country is low, which has caused injury to the Indian industry. It has also been argued by some opposing interested parties that there is excess capacity of the subject goods in the country. It has also been argued that the domestic producers are inefficient which has caused injury to them. Even if it is admitted that the demand of the subject goods is low, it would be evident that further imports would aggravate the injury to the domestic industry. A comparison of the fair selling price is the landed price of imports would show that the landed price of imports are significantly below the fair selling price. Further, a comparison of the fair selling price with actual selling price of the industry would show that the industry is selling far below the fair selling price. Further, a comparison of selling price of the industry with landed price of imports would show that there is significant price undercutting.

(E) Lost Contracts:

It has been argued by the ONGC that the information provided by the domestic industry with regard to lost contracts is factually incorrect. Since the company is in possession of the right information, we accept their contention and leave it to the Designated Authority to verify their claim. However, the claim of domestic industry on account of lost contracts in the dealers market has remained unrefuted.

(F) Custom Duty:

It has been argued by some of the opposing interested parties that the products is already attractive a high level of custom duty which have recently been increased. However, the present findings are consistent with the findings of the Designated Authority in the past on this account. It has also been the consistent practice of the Designated Authority to consider the actual levels of customs duty prevailing in the investigation period. The customs duty on this product in the investigation period were equivalent to the customs duty on the raw materials. Even now the custom duty on the raw materials and finished products are in the same region.

2. Arguments raised by ONGCL & Volszkhy:

1. The Authority is required to evaluate whether there has been an significant increase in the quantum of dumped imports either in absolute terms or relevant to production or consumption. The data furnished by the importers is far more accurate than the data provided either by the domestic producer or compiled by the DGCI&S.
2. The seamless tubes and pipes under investigation are being procured on the basis of tenders. The competitors have also conceded that even if one order is lost, the domestic industry suffers material injury. In other words, the orders awarded during the Period of Investigation is the critical factor and not the quantum of actual imports in the Period of Investigation.
3. The production and capacity utilisation have increased during the POI . Sales quantum of the domestic producers had increased and closing stock was not material injury indicator. Therefore, the only and most important indicator of material injury is the price under cutting. The alleged lower prices from the subject countries did not force the domestic producers to quote a price lower then that quoted by the five exporters, which is the important requirement to prove price under cutting.
4. The procurement in all these cases is through tenders . Each party quotes the rates based on market condition and their perception of the price that may be offered by other

competitiveness. In all the tenders of ONGC and OIL negotiation after opening the tender is prohibited. The lowest tenderer will be under cutting the others.

5. The preliminary findings (para 17) quotes two orders which the domestic industry is stated to have lost and which is held to have cost material injury. Two of these orders were before the period of investigation. In respect of the order No. MAT/IMP/154 dated 1.9.1997, the petitioners had indicated the value as Rs. 70 crores. In fact the value of this contract is Rs. 6.47 crores.

6. The conclusion that the imports from the said countries were undercutting the prices of the domestic industry is incorrect finding in as much as the lowest quotation has come from the domestic producers in all the tenders awarded by ONGC during the period of investigation.

7. Custom duty element is a very important part of the tender evaluation. The CIF prices of foreign suppliers are evaluated after including the customs duty and compared with ex-factory prices offered by the domestic producers. While it is true that the Authority will evaluate the factors during the period of investigation, the fact that these pipes and tubes are procured by public sector companies like ONGC & OIL who are engaged in providing much required oil for India at the lowest possible cost has to be kept in mind and the increase in customs duty has to be recognised. In view of this matter, the Authority may kindly fix a reference price in this case so that the benefit of the increased landed value does not accrue to the domestic industry.

14. Authority's Position:-

(a) Quantum of Imports

The Authority notes that as per DGCIS data, the quantum of imports of the subject goods during 1995-96, 1996-97 and 1997-98 (April '97-September'98 i.e. POI), were 80,667kg, 6,91,52,972 kg and 7,46,82,443 kg, respectively. Thus imports of the subject goods have increased. The data compiled by the DGCIS reflects the total position of imports and hence has been relied upon by the Authority. The market of line/boiler pipes and casing/tubing in India consists of the OEM market and dealers' market. The prominent original equipment manufacturers who are an important segment of the market for the subject goods in India include the public sector oil companies amongst others. These companies purchase the subject goods mainly through the process of international competitive bidding. Data furnished by the importers mainly pertain to imports made by public sector companies out of whom only ONGCL and OIL have responded to the importers questionnaire. This import data does not consider the imports of line/boiler pipes that are also sold through a number of dealers in India or casing/tubings sold to other OEM manufacturers or to dealers as they are required by almost all industries in large or small quantities.

(b) Price undercutting and price depression

The Authority notes that the landed values of the subject goods during the period of investigation from the subject countries were mostly in the range of ***/MT to ***/MT. These landed values were below the unit (MT) cost of production of the petitioner companies at Rs ***, Rs *** and Rs *** for MSL, KSTL and ISMTL respectively. The petitioners unit selling prices/MT during the POI were Rs ***, Rs ***, and Rs *** by MSL, KSTL and ISMTL respectively. Sales realization of the domestic industry declined to Rs ***/Mt in 1997-98 from Rs *** /Mt in 1996-97. During 1998-99 (till September'98) the selling price was Rs ***/Mt and in the POI, it was Rs ***/Mt. It is seen that at these price levels, the petitioners incurred losses (for the subject goods). Regarding actual awards during the POI, it is seen that out of *** supply orders placed by ONGCL, KSTL supplied against *** orders for J-55 and N-80 grade of casings. Other orders went to suppliers from the subject countries and to MSL and domestic processors. As stated in the Preliminary Findings, orders placed by purchasers like ONGC and OIL are large in volume. It is stated that the loss of a single order to an exporter

may imply loss of as much as three months production for the domestic industry in India. The domestic industry had therefore no other option but to ensure that the orders were not lost to any exporter, even at the cost of offering unremunerative prices.

15. CONCLUSION ON INJURY

As stated at Para J 18 of the Preliminary Findings, it is observed that:-

- (a) the quantum of imports from the subject countries account for a sizeable share of demand;
- (b) the petitioner has been forced to sell at prices below its non-injurious price resulting in losses;
- (c) imports are undercutting the prices of the domestic industry.

16. CAUSAL LINK

19. The demand for the subject goods has not declined causing injury to the domestic industry. On the other hand demand has shown increase. However, prices prevailing in the market in view of dumped imports are unrealistically low forcing the domestic industry to sell at unremunerative prices. The Authority holds that the material injury to the domestic industry has been caused by imports from the subject countries that have acquired considerable share in demand during the last three years and have undercut the prices of the domestic product forcing the domestic industry to sell below its non-injurious price. The material injury to the domestic industry was therefore caused by the dumped imports from the subject countries.

17. Anti-Dumping duty imposed:-

The Authority has evaluated the injury caused to the domestic industry on account of dumping of Seamless Tubes from the subject countries and has recommended reference price based on the injury margin being lower than dumping margin.

18. Landed Value:-

Landed value of imports is proposed to be determined after charging the actual level of all custom duties prevalent and one percent towards landing charges and two percent handling charges.

19. Assessment of Non-cooperating exporters:

For the non-cooperating exporters, the export prices have been referenced on the basis of the information furnished by the user industry and DGCI&S data. Normal Value has been constructed. Reference price has been recommended based on the injury margin being lower than dumping margin.

20. FINAL FINDINGS

The Authority after considering the foregoing, concludes that:

- (a) Seamless tubes originating in or exported from the subject countries have been exported to India below normal value, resulting in dumping;
- (b) the domestic industry has suffered injury;
- (c) injury has been caused by imports from the subject countries.

21. The Authority recommends levy of definitive anti-dumping duty on all imports of the categories/grades of dumped hot finished line pipes and boiler pipes of iron (other than cast iron) or non-alloy steel and casing and tubing of alloy and non-alloy steel under tariff classification nos. 7304.10, 7304.29 and 7304.39 of dimensions (OD) ranging from (i) 21.30 mm to 273mm or 10"NB for line and boiler pipes and (ii) 38.1 mm to 244.5mm or 9 5/8" for casing and tubing. The anti-dumping duty shall be the difference between the landed value of imports and the amount mentioned in Col.4.

Country/Exporter 1.	Category of Seamless Pipe 2.	Grade 3.	Amount (Rs/MT) 4.
Russia 1. Volzhsky Pipe Plant 2. Volzhsky Pipe Plant the manufacturer & M/s Mitsui & Co. Ltd., Tokyo, the exporter 3. All exporters of all categories of seamless pipes/tubes as described at para 21	Casing Pipe Casing Pipe All types of Seamless Pipes as per para 21	N-80 L-80 P-110 L-80	39,141 39,141 39,141
Romania 1. Petrotub S.A 2. Silcotub S.A. 3. All exporters of all categories of seamless pipes/tubes as described at para 21	Line Pipe Casing Pipe Boiler Pipe Line Pipe All types of Seamless Pipes as per para 21		Nil Nil Nil Nil 36,859
Austria Voest Alpine and all exporters of all categories of seamless pipes/tubes as described at para 21	All types of Seamless Pipes as per para 21		36,859
Czech Republic Nova Hut and all exporters of all categories of seamless pipes/tubes as described at para 21	All types of Seamless Pipes as per para 21		36,859

Ukraine	All types of Seamless Pipes as per para 21		
1. Metal Zavod Imeni Karl, Leibneccht	All types of Seamless Pipes as per para 21		Nil on account of no imports or de minimis imports as per DGCIS data
2. Yuzhnotruvny Zavod, Nikopol	All types of Seamless Pipes as per para 21		
3. All exporters of all categories of seamless pipes/tubes as described at para 21	All types of Seamless Pipes as per para 21		

22. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

23. Subject to the above, the Authority confirms the preliminary findings dated 10^{11/99}

24. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Gold (Control) Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

RATHI VINAY JHA, Designated Authority
